

## अध्याय ~27

# अपठित लेखांश व काव्यांश

‘अपठित’ अंग्रेज़ी भाषा के ‘Unseen’ शब्द का हिन्दीकृत रूप है। अपठित से अभिप्राय गद्य या पद्य के एक ऐसे अवतरण से है, जिसे पहले देखा या पढ़ा न गया हो अर्थात् वह सर्वथा नया हो। ऐसे अवतरण प्रायः पाठ्यक्रमेतर पुस्तकों, समाचार-पत्रों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से चयनित कर लिए जाते हैं।



किसी भी अवतरण को पढ़कर विधिवत् समझना और उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना समर्थ, जागरूक और संवेदनशील पाठक के लिए ही सम्भव है। अपठित लेखांश सम्बन्धी कई प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं; जैसे व्याख्या, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, संक्षेपण, विशिष्ट शब्दों या अंशों के अर्थ, अवतरण से सम्बन्धित प्रश्न, शीर्षक निर्धारण और प्रतियोगी परीक्षा में पूछे जाने वाले बहुविकल्पीय प्रश्न आदि।

### अपठित लेखांश हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- सर्वप्रथम अवतरण को भली-भाँति पढ़कर उसके मूलभाव को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। लेखांश के मूलभावों, महत्वपूर्ण विचारों और विशिष्ट शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
- कभी-कभी अवतरण में क्लिष्ट शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों की व्याख्या पूछी जाती है। ऐसे शब्द, वाक्यांश या वाक्य प्रायः रेखांकित, तारांकित अथवा स्थूलांकित अक्षरों में होते हैं। ये मूलभाव को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं, अतः इन पर विशेष ध्यान दें।
- प्रश्नों के उत्तर प्रसंग और प्रकरण के अनुकूल ही संक्षिप्त, स्पष्ट और सरल भाषा में प्रस्तुत करने चाहिए। प्रश्नों के उत्तर में अपनी ओर से कुछ भी नहीं जोड़ना चाहिए और न ही कोई उदाहरण आदि देना चाहिए। प्रायः अपठित का शीर्षक पूछा जाता है। शीर्षक सदैव मूल अवतरण के केन्द्रीय भाव के आधार पर ही निर्धारित करना चाहिए।

### लेखांश 1

वैसे तो आतंकवाद के प्रमुख कारण राजनीतिक स्वार्थ, सत्ता लोलुपता एवं धार्मिक कट्टरता हैं, किन्तु नक्सलवाद जैसे सामाजिक विद्रोह की स्थिति में देखा जाए, तो आतंकवाद के अन्य सामाजिक कारण भी हैं, जिनमें बेरोजगारी एवं गरीबी प्रमुख हैं।

विश्व के अधिकतर आतंकवादी संगठन युवाओं की गरीबी एवं बेरोजगारी का लाभ उठाकर ही उन्हें आतंकवाद के अंधे कुएँ में कूदने के लिए उकसाने में सफल रहते हैं। आतंकवाद के कुपरिणामस्वरूप अब तक दुनिया के कई राजनयिकों सहित लाखों मासूमों एवं निर्दोष लोगों की जानें जा चुकी हैं तथा लाखों लोग विकलांग एवं अनाथ बन चुके हैं। आतंकवाद के सन्दर्भ में सर्वाधिक बुरी बात यह है कि कोई नहीं जानता कि आतंकवादियों का अगला निशाना कौन होगा? इसलिए आतंकवाद ने आज लोगों के जीवन को असुरक्षित बना दिया है। यह मानव-जाति के लिए कलंक बन चुका है।

दुनिया भर के लाखों आतंकवादियों को न तो गिरफ्तार कर जेल भेजा जा सकता है और न ही उन सबको मौत की सजा देना इस समस्या का समाधान होगा। आतंकवाद की समस्या का सही समाधान यही हो सकता है कि जिन कारणों से इसमें वृद्धि हो रही है, उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समस्या के समाधान के लिए भारत सरकार को कड़े कदम उठाने होंगे एवं पाकिस्तानी घुसपैठ को रोकते हुए इस राज्य पर अपनी प्रशासनिक पकड़ मजबूत करनी होगी तथा आवश्यकता पड़ने पर पाकिस्तान से द्विपक्षीय वार्ता के अतिरिक्त युद्ध के लिए भी तैयार रहना होगा। कुल मिलाकर यही निष्कर्ष निकलता है कि आतंकवाद की समस्या के समाधान के लिए पूरे विश्व को मिलकर एक व्यापक रणनीति पर कार्य करना ही वर्तमान समय की माँग है। आतंकवाद आज वैश्विक समस्या का रूप ले चुका है, इसलिए इसका सम्पूर्ण समाधान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं प्रयासों से ही सम्भव है। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ, इन्टरपोल एवं अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

### प्रश्न

1. लेखांश में लेखक किस अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर बात कर रहा है?

- (a) लेखक आतंकवाद को विश्व के लिए एक खतरा बता रहा है।
- (b) बेरोजगारी और भुखमरी की समस्या ने आतंकवाद को जन्म दिया।
- (c) आतंकी संगठनों के असली चेहरे को उजागर किया।
- (d) लेखक नक्सलवाद की समस्या कैसे समाप्त हो, के विषय में बात कर रहा है।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

- 1. आतंकवाद आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है, जिसका समाधान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से सम्भव है।
- 2. भारत भी पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद से जूझ रहा है।
- 3. आतंकवाद के कारण लोग असुरक्षित जीवन जीने को मजबूर हैं।
- 4. आतंकवाद गिरफ्तारी और सजा से ही समाप्त होना सम्भव है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1, 2 और 3 (d) 1, 2, 3 और 4

3. लेखांश में आतंकवाद से निपटने का बेहतर उपाय क्या सुझाया गया है?

- 1. बहुपक्षीय वार्ताओं के लिए तैयार रहना।
- 2. वैश्विक स्तर पर व्यापक रणनीति।
- 3. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग।
- 4. पुलिस सुधार तथा प्रशासनिक मजबूती।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) 1, 2 और 3
- (b) 2, 3 और 4
- (c) 1, 2, 3 और 4
- (d) 1, 3 और 4

4. लेखक ने आतंकवाद के उत्पन्न होने के किस कारण को अधिक रेखांकित किया है?

- (a) राजनीतिक स्वार्थ, सत्ता आकांक्षा तथा धार्मिक कट्टरता है।
- (b) गरीबी और बेरोजगारी के कारण युवा वर्ग आतंकवाद की ओर प्रेरित होता है।
- (c) आतंकवाद सामाजिक विषमता के कारण उत्पन्न हुआ सामाजिक विद्रोह है।
- (d) विकसित देशों द्वारा शोषण जिसके विरुद्ध पिछड़े देशों द्वारा सबक सिखाने का प्रयास।

### उत्तर

1. (a) लेखक ने आतंकवाद को किसी एक देश की समस्या नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए एक चुनौती माना है, जिसके विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पक्ष हैं।
2. (a) लेखक के अनुसार, आतंकवाद की समस्या को केवल सैनिक कार्यवाही के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि वैश्विक सहयोग आवश्यक है।
3. (b) लेखांशानुसार, आतंकवाद का समाधान अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों के साथ-साथ पुलिस तथा प्रशासनिक सुधार द्वारा सम्भव प्रतीत होता है न कि आतंकवादियों के विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही द्वारा।
4. (a) लेखक के अनुसार, यद्यपि आतंकवाद के प्रमुख कारणों में बेरोजगारी, गरीबी आदि तर्क व्यापक तौर पर जिम्मेदार होते हैं, लेकिन जो सबसे प्रमुख कारण है वह है—राजनीतिक स्वार्थ, सत्ता लोलुपता एवं धार्मिक कट्टरता। राजनीतिक स्वार्थ में ही लोग बेरोजगारी एवं गरीबी को मुद्दा बनाते हुए सत्ता की प्राप्ति करते हैं और धार्मिक कट्टरता के माध्यम से ही अन्धविश्वास को फैलाते हैं। इसके माध्यम से वह आतंकवादी गतिविधियों को भी अंजाम देते हैं।

## काव्यांश 2

यह मजदूर, जो जेठ मास के इस निर्धूम अनल में  
कर्ममग्न है अविकल दग्ध हुआ पल-पल में  
यह मजदूर, जिसके अंगों पर लिपटी एक लँगोटी,  
यह मजदूर, जर्जर कुटिया में जिसकी वसुधा छोटी,  
किस तप में तल्लीन यहाँ है भूख-प्यास को जीते,  
किस कठोर साधना में इसके युग के युग हैं बीते।

### प्रश्न

1. मजदूर किस ऋतु में कार्य में मग्न है?

- (a) ग्रीष्मकालीन ऋतु
- (b) शीतकालीन ऋतु
- (c) वर्षा ऋतु
- (d) बसंत ऋतु

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) मजदूर जेठ माह की धूप में काम कर रहा है।
- (b) मजदूर पेड़ की छाँव में बैठा है।
- (c) मजदूर के शरीर पर केवल एक लँगोटी है।
- (d) मजदूर भूख-प्यास को दबाए अपने काम में तल्लीन है।

3. मजदूर कहाँ रहता है?

- (a) मजदूर एक बड़ी-सी झोंपड़ी में रहता है।
- (b) मजदूर एक बड़े मकान में रहता है।
- (c) मजदूर एक सुदृढ़ झोंपड़ी में रहता है।
- (d) मजदूर एक टूटी-फूटी छोटी झोंपड़ी में रहता है।

4. 'कर्ममग्न है अविकल दग्ध हुआ पल-पल में' का आशय है

- (a) मजदूर कड़ी धूप से व्याकुल है, परन्तु फिर भी अपने कार्य में रत है।
- (b) मजदूर कड़ी धूप से व्याकुल हो एक पेड़ की छाँव में बैठकर अपने कार्य में रत है।
- (c) मजदूर कड़ी धूप से तपता हुआ भी बिना व्याकुल हुए अपने कार्य में रत है।
- (d) मजदूर ने कड़ी धूप से व्याकुल होकर अपना कार्य रोक दिया है।

5. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक होगा

- (a) कर्मशील मजदूर
- (b) गरीब मजदूर
- (c) भूखा-प्यासा मजदूर
- (d) मजदूर की दशा

### उत्तर

1. (a) काव्यांश में मजदूर ग्रीष्मकालीन ऋतु में कार्य में मग्न है। जेठ मास को गर्मी का महीना भी कहा जाता है। अतः मजदूर गर्मी के महीने में अपना कार्य कर रहा है।
2. (b) काव्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि 'मजदूर पेड़ की छाँव में बैठा है' यह कथन असत्य है, क्योंकि वह बैठा नहीं है बल्कि अत्यंत भीषण गर्मी में भी कार्य कर रहा है।
3. (d) काव्यांश के अनुसार, मजदूर एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहता है। उसके पास रहने के लिए बड़ा मकान या सुदृढ़ झोंपड़ी नहीं है।
4. (c) 'कर्ममग्न है अविकल दग्ध हुआ पल में' पंक्ति का आशय है कि मजदूर कड़ी धूप में तपता हुआ भी बिना व्याकुल हुए अपने कार्य में रत है।
5. (a) प्रस्तुत काव्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक 'कर्मशील मजदूर' होगा, क्योंकि काव्यांश में मजदूर की कर्मशील प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है, वह भीषण गर्मी में भी मग्न होकर अपना कार्य कर रहा है।

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** (प्र. सं. 1-5) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 1

कुन्ती अपने लाड़ले लाल को, अपने हृदय के टुकड़े को, अपने प्यारे नवजात शिशु को नदी में छोड़कर लौट आई। वह छोटी नदी थी। वायु अनुकूल थी, दैव की गति जानी नहीं जाती। वह नदी चम्बल नदी में जाकर मिलती है। अब शिशु की पिटारी बहती-बहती चम्बल नदी में आ गई। इटावे के पास चम्बल नदी आकर यमुना में मिलती है। अतः चम्बल के प्रवाह के साथ वह भी यमुना में आ गई और यमुना के साथ प्रयाग की ओर बढ़ी। तीर्थराज प्रयाग में जाकर यमुना, गंगा में मिल जाती है। अतः अब वह मंजूषा शिशु को लेकर काशी की ओर बहने लगी। उसके साथ न कोई मल्लाह था न पथ प्रदर्शक। भाग्य उसे स्वयं ही बहाकर ले जा रहा था। काशीपुरी, पाटलिपुत्र आदि राज्यों की सीमा को पार करती हुई गंगा के प्रवाह के साथ वह मंजूषा बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ी चली जा रही थी। आगे चलकर वह अंग देश की सीमा में पहुँची। अब मानो उसकी यात्रा समाप्त होगी उसी समय चम्पा नगरी के राजा अधिरथ अपनी स्त्री राधा और अपने सेवकों के सहित गंगा स्नान करने आए थे। उन्होंने दूर से इस सुन्दर-सी पेटी को जाह्नवी की लहरों के साथ क्रीड़ा करते देखा। अन्त में उन्होंने अपने सेवकों को आज्ञा दी-सामने यह जो मंजूषा बहती जा रही है, उसे पकड़ कर लाओ। (UPSSSC VDO 2018)

- कुन्ती अपने नवजात सुकुमार शिशु को कहाँ छोड़कर आई थी?  
(a) तालाब (b) नदी  
(c) समुद्र (d) कुआँ
- मंजूषा को कौन लेकर जा रहा था?  
(a) सेवक (b) मल्लाह  
(c) पथप्रदर्शक (d) भाग्य
- राजा अधिरथ ने सेवकों को क्या आज्ञा दी थी?  
(a) मंजूषा को लाने की (b) शिशु को लाने की  
(c) सेना को लाने की (d) राधा को लाने की
- चम्पा नगरी के राजा किसके साथ गंगा-स्नान करने आए थे?  
(a) राधा और सेवक (b) सेना और सेवक  
(c) राधा और सेना (d) सेना और शिशु
- अधिरथ ने जाह्नवी की लहरों के साथ किसे क्रीड़ा करते देखा था?  
(a) कुन्ती के पुत्र को (b) पेटी को  
(c) छोटे शिशु को (d) सेवक को

**निर्देश** (प्र. सं. 6-7) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 2

हमारा जीवन पाखण्डमय बन गया है और हम इसके बिना नहीं रह सकते हैं। अपने सार्वजनिक जीवन अथवा निजी जीवन में कहीं भी देखें हम एक-दूसरे को छलने की कला का खुलकर उपयोग करते हैं, इसके बावजूद यह विश्वास करते हैं कि हम ऐसा कुछ भी नहीं कर रहे हैं।

हम इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसकी उस अवसर पर कोई आवश्यकता नहीं होती। हम किसी भी बात को यह जानते हुए कि वह सही या सत्य नहीं है, लेकिन उसके प्रति निष्ठा या विश्वास इस तरह प्रकट करते हैं कि जैसे हमारे लिए वही एकमात्र सत्य है। हम सब यह इसलिए सरलता से कर लेते हैं,

क्योंकि आज पाखण्ड एवं दिखावा हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। आज हम लोगों में से अधिकांश की स्थिति मुँह में कुछ और मन में कुछ और वाली बन गई है। (UPTET 2019)

- हमने जीवन का अभिन्न अंग किसे बना लिया है?  
(a) भाषा को (b) पाखण्ड और दिखावे को  
(c) निष्ठा एवं विश्वास को (d) सरलता को
- छलने की कला का हम किस प्रकार उपयोग करते हैं?  
(a) खुलकर (b) आवश्यकतानुसार  
(c) पूरी निष्ठा से (d) सरलता से

**निर्देश** (प्र. सं. 8-9) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 3

हम इस बात को जानते हैं कि तुम हमारे प्रेम के कारण वनवास के कष्टों को सहन करने के लिए तैयार हो, लेकिन घर पर रहकर हमारे साथ स्नेह की तुम और भी अधिक रक्षा कर सकती हो। सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे न रहने पर माँ जब व्याकुल होगी, तब तुम सन्तोषजनक बातें कहकर उन्हें समझाना लेकिन सीता पर इन बातों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। सीता साधारण स्त्री न थीं, वह अपने कर्तव्य को समझती थीं। इसलिए इन सभी बातों के उत्तर देकर वह वनवास के लिए अपनी इच्छा को तोड़ न सकीं।

यहाँ यह बात बताने की आवश्यकता नहीं है कि सीता को जो यह अमर कीर्ति प्राप्त हुई, प्रत्येक स्त्री के लिए वह प्रातः स्मरणीय हो सकी इसका कारण यह नहीं है कि वह राजा जनक की बेटी थीं और राजा दशरथ की पुत्रवधू थीं। रामचन्द्र की पत्नी होना भी उनका कोई विशेष कारण नहीं है। उस कीर्ति का एकमात्र कारण है अपने धर्म और कर्तव्य के लिए उनका कष्ट सहना।

अपनी सत्य-निष्ठा और धर्म-परायणता, चरित्र-बल और कष्ट सहने के लिए उनको जो अमर कीर्ति संसार के इतिहास में मिल सकी, उसको बताने की आवश्यकता नहीं। (UPSSSC Pre 2016)

- सीता जी को अमर कीर्ति किस कारण प्राप्त हुई?  
(a) राजा जनक की पुत्री होने के कारण  
(b) राजा दशरथ की पुत्रवधू होने के कारण  
(c) रानी कौशल्या की सेवा करने के कारण  
(d) अपने धर्म और कर्तव्य के लिए उनका कष्ट सहना
- उपरोक्त लेखांश का शीर्षक बताइए।

- (a) सीता का त्याग (b) सीता की सेवा-भावना  
(c) धर्म और कर्तव्य-परायण सीता (d) सीता का समर्पण

**निर्देश** (प्र. सं. 10-12) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 4

तत्परता हमारी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है। इसके द्वारा विश्वसनीयता प्राप्त होती है। वे लोग, जो सदैव जागरूक रहते हैं, तत्काल कर्मरत हो जाते हैं और जो समय के पाबन्द हैं, वे सर्वत्र विश्वास के पात्र समझे जाते हैं। वे मालिक, जो स्वयं कार्य-तत्पर होते हैं, अपने कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और काम की उपेक्षा करने वालों के लिए अंकुश का काम करते हैं। वे अनुशासन का साधन भी बनते हैं। इस प्रकार अपनी उपयोगिता और सफलता में

अभिवृद्धि करने के साथ-साथ वे दूसरों की उपयोगिता और सफलता के भी साधन बनते हैं। एक आलसी व्यक्ति हमेशा ही अपने कार्य को भविष्य के लिए स्थगित करता जाता है, वह समय से पिछड़ता जाता है और इस प्रकार अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी विक्षोभ का कारण बनता है। उसकी सेवाओं का कोई आर्थिक मूल्य नहीं समझा जाता। कार्य के प्रति उत्साह और उसे शीघ्रता से सम्पन्न करना कार्य-तत्परता के दो प्रमुख उत्पादान हैं, जो समृद्धि की प्राप्ति में उपयोगी बनते हैं।

(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)

10. उपरोक्त लेखांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

- (a) कार्य-कुशलता
- (b) कार्य-उपयोगिता
- (c) कार्य-तत्परता
- (d) जागरूकता

11. जीवन में सफल सिद्ध होने के लिए आवश्यक उपादानों में से एक प्रमुख उपादान क्या है?

- (a) कार्य की आर्थिक समझ
- (b) जागरूकता
- (c) अनुशासन
- (d) तत्परता

12. लेखांश का उचित संक्षेपण कौन-सा होगा?

- (a) तत्परता हमारी मूल्यवान निधि है। इससे हम तत्पर होकर कार्य करते हैं और समय पर कार्य करके सफलता प्राप्त करते हैं।
- (b) जागरूक व्यक्ति सदैव उत्साहित होकर तत्परता से अपने कार्य में जुट जाते हैं और अनुशासित होकर उसे समय पर पूरा करने का प्रयास करते हैं। समय पर कार्य करने से वे अपने कार्यक्षेत्र में सभी के विश्वासपात्र बन जाते हैं और यही विश्वसनीयता सफलता का साधन बनती है। यही तत्परता सफलता और समृद्धि का प्रमुख उपादान है।
- (c) सफलता के लिए तत्परता का होना आवश्यक है। अनुशासन में रहकर कार्य समय से पूरा करके सफलता मिलती है।
- (d) उत्साह और शीघ्रता कार्य-तत्परता के दो प्रमुख उपादान हैं, जो जागरूक होकर कार्य करने को बाध्य करते हैं, जिससे कार्य समयानुसार पूरा होता है और सफलता मिलती है।

निर्देश (प्र. सं. 13-17) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 5

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए चरित्र निर्माण परम आवश्यक है। जिस प्रकार वर्तमान में भौतिक निर्माण का कार्य अनेक योजनाओं के माध्यम से तीव्र गति के साथ सम्पन्न हो रहा है, वैसे ही वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि देशवासियों के चरित्र निर्माण के लिए भी प्रयत्न किया जाए। उत्तम चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र की सर्वोच्च सम्पदा है। जनतन्त्र के लिए तो यह एक महान कल्याणकारी योजना है। जन-समाज में राष्ट्र, संस्कृति, समाज एवं परिवार के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है इसका पूर्ण रूप से बोध कराना एवं राष्ट्र में व्याप्त समग्र भ्रष्टाचार के प्रति निषेधात्मक वातावरण का निर्माण करना ही चरित्र निर्माण का प्रथम सोपान है। पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के प्रभाव से आज हमारे मस्तिष्क में भारतीयता के प्रति 'हीन भावना' उत्पन्न हो गई है। चरित्र निर्माण, जोकि बाल्यावस्था से ही ऋषिकुल, गुरुकुल, आचार्यकुल की शिक्षा के द्वारा प्राचीन समय से किया जाता था, आज की लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से संचालित स्कूलों एवं कॉलेजों के लिए एक हास्यास्पद विषय बन गया है। आज यदि कोई पुरातन संस्कारी विद्यार्थी संध्यावन्दन या शिक्षा-सूत्र रखकर भारतीय संस्कृतियम जीवन बिताता है, तो अन्य छात्र उसे 'बुद्धू' या अप्रगतिशील कहकर उसका मजाक उड़ाते हैं। आज हम अपने भारतीय आदर्शों का परित्याग करके पश्चिम के अन्धानुकरण को ही प्रगति मान बैठे हैं। इसका घातक परिणाम चरित्र-दोष के रूप में आज देश में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)

13. चरित्र निर्माण की परम आवश्यकता है

- (a) राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए
- (b) राष्ट्र की योजनाओं के संचालन के लिए
- (c) मानवमात्र के कल्याण के लिए
- (d) समाजोपयोगी कार्यों के लिए

14. जनतन्त्र के लिए लाभकारी हो सकते हैं

- (a) धनवान व्यक्ति
- (b) उत्तम चरित्रवान व्यक्ति
- (c) शक्तिशाली सिपाही
- (d) निष्ठावान श्रमिक

15. उन्नत राष्ट्र के लिए विकास का प्रथम सोपान है

- (a) जनता में साम्प्रदायिक सद्भाव
- (b) राजनीतिक के कुशल दौड़-पेंच
- (c) चरित्र निर्माण के लिए शैक्षिक वातावरण
- (d) भ्रष्टाचार के प्रति निषेधात्मक वातावरण

16. अप्रगतिशील रूप में मजाक उड़ाया जाता है, जो

- (a) सत्संग में अधिक समय नहीं बिताता है
- (b) धार्मिक वातावरण में जीवन बिताता है
- (c) भारतीय संस्कृतियम जीवन बिताता है
- (d) पाश्चात्य संस्कृति को हृदय से अपनाता है

17. भारतीयता के प्रति हीन भावना का कारण है

- (a) लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति
- (b) प्राचीन गुरुकुल की शिक्षा पद्धति
- (c) वर्तमान वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति
- (d) पुरातन संस्कारी संस्कृतियम जीवन

निर्देश (प्र. सं. 18-22) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 6

देश की उन्नति के लिए गाँधीजी ने ग्रामोन्नति को सर्वोपरि माना है। भारतीय ग्राम, भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के प्रतीक हैं। ग्राम ही भारतवर्ष की आत्मा है और सम्पूर्ण भारत उनका शरीर। शरीर की उन्नति आत्मा की स्वस्थ होने पर ही सम्पूर्ण शरीर में नवचेतना व नवशक्ति का संचार होता है। आज भी भारत की 60% जनसंख्या गाँवों में ही बसती है।

गाँधीजी कहा करते थे “भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं।”

अतः भारत की उन्नति नगरों की उन्नति पर नहीं अपितु गाँवों की उन्नति पर निर्भर करती है। अतः ग्रामोन्नति का कार्य देशोन्नति का कार्य है। महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त ने 'भारतमाता ग्रामवासिनी' नामक कविता में ठीक ही कहा है कि भारतवर्ष का वास्तविक स्वरूप गाँवों में है।

(MPPSC Pre 2015)

18. भारतीय ग्राम किसके प्रतीक हैं?

- (a) यूरोप की प्राचीन सभ्यता के
- (b) भारत की प्राचीन संस्कृति के
- (c) भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

19. शरीर में चेतना व शक्ति का संचार कब होता है?

- (a) जब शरीर स्वस्थ हो
- (b) जब लोग स्वस्थ हों
- (c) जब आत्मा स्वस्थ हो
- (d) जब कोई भी स्वस्थ न हो

20. किसानों को क्या बताया गया है?

- (a) उन्नति का प्रतीक
- (b) आलसियों का अवतार
- (c) सेवा और परिश्रम का अवतार
- (d) इनमें से कोई नहीं

21. भारत की उन्नति निर्भर करती है

- (a) महानगरों की उन्नति पर (b) शहरों की उन्नति पर  
(c) कस्बों की उन्नति पर (d) ग्रामों की उन्नति पर

22. 'ग्रामोन्नति' शब्द बना है

- (a) ग्रामो + नति (b) ग्रामो + नति  
(c) ग्रामोन्न + ति (d) ग्राम + उन्नति

**निर्देश** (प्र. सं. 23-27) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 7

तेंदुए बाघ से ज्यादा चालाक होते हैं। जिम कॉबेट ने कहा था कि सब कुछ कहने और करने के बाद भी बाघ सज्जन है। तेंदुए की बाघ की अपेक्षा गाँव अथवा घरों में भी प्रवेश करने की सम्भावना ज्यादा है।

वह झोंपड़ी की बगल में लेटा हुआ इसका इन्तजार करता है कि कब एक खतरे से अंजान बच्चा बाहर आए और तब वह उसको गर्दन से दबोच ले। कोई भी आवाज नहीं होगी और बच्चा यूँ ही गायब हो जाएगा।

एक बाघ बच्चे के लिए अपने को कभी-कभार तकलीफ नहीं देगा, क्योंकि उसके लिए यह बहुत कम है। यह व्यय-लाभ का प्रश्न है। बाघ बच्चे को पकड़ने और मारने में जितनी ऊर्जा व्यय करेगा उसकी अपेक्षा उसे बहुत कम भोजन उपलब्ध होगा। इसके बजाय वह एक भैंसे अथवा किसी खुर वाले जंगली शिकार को मारेगा, जिससे उसको काफी अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध होगा।

एक बाघ का वजन 180-230 किग्रा होता है, जबकि तेंदुआ लगभग 50 किग्रा के आसपास। अपने सामान्य भोजन; जैसे कि कुत्ते, बकरियाँ और मुर्गे आराम से सुलभ होने पर भी, तेंदुए बच्चों को उठाने पर उतर आते हैं।

(MPPSC Pre 2017)

23. बाघ एक बच्चे के बजाय एक भैंसे को मारेगा

- (a) क्योंकि एक भैंसे को मारना आसान है।  
(b) क्योंकि एक बच्चे को मारना कठिन है।  
(c) क्योंकि बाघ चालाक नहीं होते।  
(d) क्योंकि बाघ, बच्चे को पकड़ने और मारने में जितनी ऊर्जा खर्च करेगा, उसकी अपेक्षा उसे बहुत कम भोजन मिलेगा।

24. तेंदुए बच्चों को उठाने पर उतर आते हैं

- (a) जब सामान्य भोजन उपलब्ध नहीं होता  
(b) सामान्य भोजन उपलब्ध होने के बावजूद  
(c) जब बाघ, भैंसों का शिकार करते हैं  
(d) जब वे गाँव में प्रवेश करते हैं

25. निम्न कथनों में से कौन-सा असत्य है?

- (a) बाघों की गाँव अथवा घरों में भी प्रवेश करने की सम्भावना अधिक होती है।  
(b) तेंदुओं की गाँव अथवा घरों में भी प्रवेश करने की सम्भावना अधिक होती है।  
(c) बाघ बच्चों का शिकार शायद ही करेगा।  
(d) तेंदुओं का सामान्य भोजन कुत्ते, बकरियाँ और मुर्गे होते हैं।

26. जिम कॉबेट ने कहा था कि

- (a) तेंदुए चालाक जानवर हैं। (b) बाघ चालाक जानवर हैं।  
(c) तेंदुए सज्जन हैं। (d) बाघ सज्जन हैं।

27. तेन्दुए

- (a) केवल बच्चों को खाते हैं।  
(b) केवल कुत्तों और बकरियों को खाते हैं।  
(c) केवल मुर्गों को खाते हैं।  
(d) कुत्ते, बकरियों, मुर्गों और बच्चों को खाते हैं।

**निर्देश** (प्र. सं. 28-32) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 8

उष्णकटिबन्धीय कीटों के विभिन्न समूहों में तितलियों और चींटियों को वर्गीकरण विज्ञान में, शायद सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है, जबकि तितलियाँ पर्यावरण बदलाव की सबसे अच्छी संकेतक हो सकती हैं, वयस्क तितलियाँ केवल कुछ पारिस्थितिक उपयुक्त स्थान को भरती हैं। अधिकांश प्रजातियाँ परागणकर्ता अथवा सफाई करने वाली होती हैं।

इसके विपरीत, चींटियाँ किसी भी पारिस्थितिक व्यवस्था में एक बहुत अधिक परिवर्तनशील भूमिका निभाती हैं। चींटियों को अधिकांश स्थलीय जगत को चलाने में एक मुख्य मिट्टी को उलट-पलट करने वाली और ऊर्जा चैनल को देने वाली माना जाता है। किसी भी स्थलीय पारिस्थितिक व्यवस्था में, चींटियाँ भी परभक्षी, परागणकर्ता, फसल काटने वाली और अपघटनकर्ता की भूमिका निभाती हैं। (MPPSC Pre 2017)

28. निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है?

- (a) चींटियाँ और तितलियाँ दोनों परागणकर्ता की भूमिका निभाती हैं।  
(b) तितलियाँ परागणकर्ता की भूमिका निभाती हैं, पर चींटियाँ नहीं।  
(c) चींटियाँ परागणकर्ता की भूमिका निभाती हैं पर तितलियाँ नहीं।  
(d) न ही चींटियाँ और न तितलियाँ परागणकर्ता की भूमिका निभाती हैं।

29. तितलियाँ

- (a) वर्गीकरण विज्ञान में अच्छी तरह से नहीं जानी जाती हैं।  
(b) पर्यावरण बदलाव की अच्छी संकेतक हैं।  
(c) परभक्षी, परागणकर्ता, फसल काटने वाली और अपघटनकर्ता होती हैं।  
(d) अधिकांश स्थलीय व्यवस्था को चलाती हैं।

30. चींटियों को अधिकांश स्थलीय व्यवस्था को चलाने वाला माना जाता, क्योंकि

- (a) वे परागणकर्ता और सफाई करने वाली होती हैं।  
(b) वे वर्गीकरण विज्ञान में अच्छी तरह से जानी जाती हैं।  
(c) वे पारिस्थितिक व्यवस्था में एक परिवर्तनशील भूमिका निभाती हैं।  
(d) वे मुख्य रूप से मिट्टी को उलट-पलट करने वाली और ऊर्जा चैनल को देने वाली होती हैं।

31. चींटियाँ और तितलियाँ

- (a) पर्यावरण बदलाव की अच्छी संकेतक हैं।  
(b) उष्णकटिबन्धीय कीट हैं।  
(c) वर्गीकरण विज्ञान में अच्छी तरह से नहीं जानी जाती हैं।  
(d) पारिस्थितिक व्यवस्था में कोई भूमिका नहीं निभाती हैं।

32. तितलियों की अधिकांश जातियाँ परागणकर्ता और सफाई करने वाली होती हैं। अतः

- (a) वे चींटियों की अपेक्षा, पारिस्थितिक व्यवस्था में एक परिवर्तनशील भूमिका निभाती हैं।  
(b) वे अधिकांश स्थलीय व्यवस्था को चलाती हैं।  
(c) उनको वर्गीकरण विज्ञान में अच्छी तरह से जाना जाता है।  
(d) वे केवल कुछ ही पारिस्थितिक उपयुक्त स्थान को भरती हैं।

**निर्देश** (प्र. सं. 33-37) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 9

भारत के विभिन्न भागों में, आम लोगों ने जिस वीरता का प्रदर्शन किया वह अभूतपूर्व था। निहत्थे पुरुष और महिलाएँ लम्बे जुलूसों में पुलिस स्टेशनों पर कब्जा करने के लिए पंक्तिबद्ध होकर आगे बढ़े जबकि उन पर भारतीय पुलिसकर्मियों द्वारा गोली चलाई गई। गोलियों से बहुतायत में जान से मारे गए, बहुत से घायल हो गए; फिर भी थोड़ी रुकावट के बाद जुलूस आगे बढ़ता गया। एक घटना में, एक वृद्ध महिला स्वेच्छा से जुलूस के आगे-आगे राष्ट्रीय ध्वज लेकर मार्च कर रही थी। वह तीन



गोलियाँ खाकर भी मरते समय तक ध्वज को ऊँचा करके उठाए रही। उसने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि वह युवा पुरुषों को प्राण निछावर नहीं करने देना चाहती थी जब तक कि उसकी उम्र वाले लोग जिन्दा थे। (MPPSC Pre 2016)

**33.** निहत्ये पुरुष और महिलाएँ लम्बे जुलूसों में पंक्तिबद्ध होकर आगे बढ़े

- राष्ट्रीय ध्वज को कब्जे में लेने के लिए
- भारतीय पुलिसकर्मियों को गोली मारने के लिए
- पुलिस स्टेशनों पर कब्जा करने के लिए
- जुलूसों में थोड़े समय के लिए रुकावट पैदा करने के लिए

**34.** निहत्ये पुरुषों और महिलाओं पर किसके द्वारा गोली चलाई गई?

- जो लोग राष्ट्रीय ध्वज को ऊँचा उठाकर पकड़े हुए थे
- सेना
- ब्रिटिश
- भारतीय पुलिसकर्मी

**35.** लेखांश में 'बहुतायत' शब्द का क्या अर्थ है?

- संगीत
- ढोल की आवाज
- बहुत-से
- जुलूस

**36.** वृद्ध महिला ने अपने प्राण दे दिए, क्योंकि

- उसे एहसास नहीं था कि भारतीय पुलिसकर्मी उसे गोली मार देंगे।
- उसके बच्चों ने उसे मजबूर किया था।
- वह युवा लोगों को मरने नहीं देना चाहती थी, जब तक कि उसकी उम्र के वृद्ध लोग जिन्दा थे।
- जुलूस में रुकावट पैदा की गई थी।

**37.** जब बहुत-से लोग गोली से मारे गए और घायल हो गए, तो उसके बाद

- जुलूस एकदम से रुक गया
- जुलूस में केवल वृद्ध लोग बचे
- जुलूस में केवल नेता लोग थे और साधारण लोग नहीं बचे
- जुलूस थोड़ी रुकावट के बाद फिर से आरम्भ हो गया

**निर्देश (प्र. सं. 38-42) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

## लेखांश 10

जल का जीवन से बहुत महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। हमारे शरीर में तीन भाग, पानी का है। उसी प्रकार धरती पर तीन भाग जल का है। जल के कारण हरियाली है और हरियाली से ऑक्सीजन प्राप्त होती है, परन्तु आजकल लोग इण्डस्ट्रीज तथा रिहायशी भवनों के नाम पर एवं गलत निर्णयों के कारण हरियाली का विनाश कर रहे हैं तथा जल का धरती से गलत दोहन किया जा रहा है। 'जल ही जीवन है' और 'बिन पानी सब सून' यानी जल के बिना हम जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते। जल के बिना सारी पृथ्वी का पर्यावरण प्रदूषित हो जाएगा तथा पृथ्वी रहने लायक नहीं रहेगी। इस कारणवश पृथ्वी मानव विहीन हो जाएगी।

(मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)

**38.** दिए गए लेखांश का उचित शीर्षक लिखिए।

- जल का महत्व
- जल का महत्त्व
- जल का महत्त्व
- जल का महत्त्व

**39.** धरती पर कितना भाग पानी है?

- दो भाग
- चार भाग
- तीन भाग
- पाँच भाग

**40.** हरियाली किसके कारण होती है?

- जल के कारण
- पौधों के कारण
- तालाबों के कारण
- नालियों के कारण

**41.** हरियाली के विनाश का क्या कारण है?

- इण्डस्ट्रीज, रिहायशी भवनों के नाम पर, जल का धरती से गलत दोहन एवं गलत निर्णय के कारण हरियाली का विनाश हो रहा है।
- इण्डस्ट्रीज, रिहायशी भवनों के नाम पर, जल का धरती से गलत दोहन एवं गलत निर्णयों के कारण जल का विनाश हो रहा है।
- इण्डस्ट्रीज, रिहायशी भवनों के नाम पर, पेड़-पौधों का धरती से गलत दोहन एवं गलत निर्णयों के कारण हरियाली का विनाश हो रहा है।
- सड़कों भवनों के नाम पर, जल का धरती से गलत दोहन एवं गलत निर्णयों के कारण हरियाली का विनाश हो रहा है।

**42.** ऑक्सीजन हमें कहाँ से प्राप्त होती है?

- हमें हरियाली से ऑक्सीजन प्राप्त होती है।
- हमें जल से ऑक्सीजन प्राप्त होती है।
- हमें प्रदूषण कम होने से ऑक्सीजन प्राप्त होती है।
- हमें फूलों से ऑक्सीजन प्राप्त होती है।

**निर्देश (प्र. सं. 43-48) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

## लेखांश 11

विश्व में हर व्यक्ति सुख चाहता है, लेकिन इसकी प्राप्ति का मन्त्र वह नहीं जानता। भौतिक सुखों को ही सच्चा सुख मानने की भूल वह करता चला आ रहा है। संसार में प्रत्येक सम्बन्ध के साथ संयोग-वियोग जुड़ा हुआ है, दिन के साथ रात, सुख के साथ दुःख, लाभ के साथ हानि, मान के साथ अपमान जुड़ा हुआ है यदि कोई विषय ऐसा है, जिसके साथ कुछ भी नहीं जुड़ा है, तो वह है आनन्द। यह अन्तःकरण का विषय है, पराश्रित नहीं है। संवेदनशील व्यक्ति ही आनन्द की अनुभूति कर सकता है। सुखी होने के लिए दूसरों को सुखी देखकर सुख का अनुभव करना व दुःखियों को देखकर करुणा से द्रवित होना आवश्यक है। संवेदनाशून्य व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकते। जो कर्म को कर्तव्य समझकर निष्ठापूर्वक करते हैं, वे ही आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। सच्चा सुख आसक्ति के त्याग में है, कर्म के त्यागने में नहीं। कर्म से प्राप्त होने वाले फल के प्रति आसक्ति त्यागने पर ही व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

**43.** संसार में प्रत्येक मनुष्य क्या चाहता है?

- कार, बंगला और शान-शौकत
- यश की प्राप्ति
- रुपयों का ढेर
- सुख

**44.** जो भाव पराश्रित न होकर स्वयं के अन्तःकरण से जुड़ा हो, है

- हास्य-विनोद
- आनन्द
- अपमान
- असहयोग

**45.** आनन्द की अनुभूति करने के लिए क्या आवश्यक है?

- विद्वता
- अपरिग्रहता
- सहिष्णुता
- संवेदनशीलता

**46.** संवेदनशीलता क्या है?

- दूसरों को दुःखी देखकर सुख अनुभव करना
- दूसरों को सुखी देखकर दुःख अनुभव करना
- दूसरों को सुखी देखकर सुख व दुःखी देखकर करुणा का अनुभव करना
- उपरोक्त में से कोई नहीं

**47.** सुखी जीवन का मन्त्र क्या है?

- कर्म का त्याग
- गृहस्थ जीवन का त्याग
- आलस्य का त्याग
- आसक्ति का त्याग

**48.** मनुष्य किसे सच्चा सुख मानने की भूल करता रहता है?

- अपमान
- संवेदनशीलता
- भौतिक सुख
- आलस्य

**निर्देश** (प्र. सं. 49-53) दिए गए काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### काव्यांश 12

हवा हूँ, हवा मैं बसन्ती हवा हूँ  
सुनो बात मेरी बड़ी बावली हूँ  
बड़ी मस्तमौला।  
नहीं कुछ फिकर है बड़ी ही निडर हूँ  
जिधर चाहती हूँ उधर घूमती हूँ  
मुसाफिर अजब हूँ (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)

49. हवा अपना परिचय किस प्रकार दे रही है?

- हवा अपना परिचय बसन्ती हवा के रूप में दे रही है।
- हवा अपना परिचय गर्मी के रूप में दे रही है।
- हवा अपना परिचय हवा के रूप में दे रही है।
- हवा अपना परिचय पूर्वी हवा के रूप में दे रही है।

50. इस काव्यांश का शीर्षक बताइए

- पूर्वी हवा
- पश्चिमी हवा
- बसन्ती हवा
- बेफिक्र हवा

51. हवा की क्या-क्या विशेषता बताई गई हैं?

- हवा बुद्धिमान, मस्तमौला, बेफिक्र, निडर, स्वच्छन्द और इधर-उधर घूमने वाली अनोखी मुसाफिर है।
- हवा बावली, मस्तमौला, बेफिक्र, निडर, स्वच्छन्द और इधर-उधर घूमने वाली अनोखी मुसाफिर है।
- हवा बावली, मस्तमौला, बेफिक्र, निडर, स्वच्छन्द और इधर-उधर न घूमने वाली अनोखी मुसाफिर है।
- हवा बावली, मस्तमौला, बेफिक्र, निडर, स्वच्छन्द और इधर-उधर घूमने वाली अनोखी मुसाफिर है।

52. बसन्ती हवा को मस्तमौला क्यों कहा गया है?

- क्योंकि वह फिक्र के साथ डर पूर्वक इधर-उधर घूमती रहती है।
- क्योंकि वह बिना फिक्र के निडरतापूर्वक घूमती नहीं है।
- क्योंकि वह बिना फिक्र के निडरतापूर्वक इधर-उधर नहीं घूमती रहती है।
- क्योंकि वह बिना फिक्र के निडरतापूर्वक इधर-उधर घूमती रहती है।

53. बसन्ती हवा को एक अजीब मुसाफिर की संज्ञा क्यों दी गई है?

- क्योंकि वह सभी जगह पर निखर रूप से मन मुताबिक घूमती है।
- क्योंकि वह सभी जगह पर निडर और स्वतन्त्र रूप से मन मुताबिक नहीं घूमती है।
- क्योंकि वह सभी जगह पर निडर और स्वतन्त्र रूप से मन मुताबिक घूमती है।
- क्योंकि वह कुछ जगह पर निडर और स्वतन्त्र रूप से मन मुताबिक घूमती है।

**निर्देश** (प्र. सं. 54-63) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 13

एक गाँव में अलगू चौधरी और जुम्न शेख नामक दो मित्र रहते थे। दोनों की मित्रता गाढ़ी थी। जुम्न शिक्षित था, अलगू धनवान। जुम्न की एक बूढ़ी मौसी विधवा थी। वह निःसन्तान थी, पर थी मिल्कियत वाली। उसने चारों ओर आँख उठाकर देखा, जुम्न के सिवा कहीं उसका कोई अपना नजर न आया। मौसी ने जुम्न के नाम अपनी मिल्कियत रजिस्ट्री कर दी। जुम्न ने वादा किया कि वह आजीवन मौसी को खाना-कपड़ा देगा। पर रजिस्ट्री होते ही जुम्न ने रंग बदला। वह मौसी जो पहले सर पर बैठी थी; अब पैरों तले कुचली जाने लगी। बूढ़ी मौसी ने समझा कि वह सब जुम्न की पत्नी की बदमाशी है। उसने जुम्न से शिकायत की, जुम्न चुप रहा।

तब मौसी का माथा ठनका। उसने जुम्न को पंचायत की धमकी दी। बूढ़ी मौसी हाथ में लकड़ी लिए आसपास के गाँवों में पंचों के पास दौड़ती रही। सबके सामने उसने दुःख के आँसू बहाए। अलगू इस झगड़े से अलग रहना चाहता था, पर बूढ़ी मौसी उसे बीच में घसीटना चाहती थी। अलगू ने मौसी से कहा, “जुम्न मेरा मित्र है, उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।” मौसी ने कहा, “तो क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?” इस ललकार को सुनकर अलगू के भीतर सोया हुआ धर्मज्ञान जाग पड़ा। उसने पंचायत में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी। प्रश्न यह उठा कि सरपंच किसे बदा जाए, जुम्न ने इस प्रश्न का निपटारा मौसी के हाथ ही छोड़ दिया। मौसी ने अलगू को सरपंच बदा। लोगों ने समझा कि अब जुम्न की विजय निश्चित है। अलगू जुम्न का मित्र है। उसका फैसला जुम्न के पक्ष में होगा। पर, सरपंच के पद पर बैठते ही अलगू का उत्तरदायित्व ज्ञान जाग पड़ा। वह भूल गया कि जुम्न उसका दोस्त है। उसने सत्य और न्याय का पक्ष लिया। उसका फैसला बूढ़ी मौसी के पक्ष में हुआ। उसने फैसला किया—“खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए, अगर जुम्न को खर्च देना मंजूर न हो तो हिब्बानामा रद्द समझा जाए।” (नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक क्लर्क परीक्षा 2010)

54. किसकी मौसी विधवा थी?

- अलगू चौधरी की
- जुम्न शेख की
- किसी की नहीं
- 1 और 2

55. पंचायत में सम्मिलित होने की स्वीकृति किसने दी थी?

- जुम्न ने
- अलगू ने
- मौसी ने
- गाँव के एक आदमी ने

56. अलगू चौधरी और जुम्न शेख ..... और एक ..... रहते थे।

- पड़ोसी थे, घर में
- पड़ोसी थे, गाँव में
- दो मित्र थे, गाँव में
- दो दुश्मन थे, गाँव में

57. निम्नलिखित में से निश्चित रूप से क्या सत्य है?

- अलगू और जुम्न के बीच दुश्मनी थी।
- जुम्न मौसी का एकमात्र बेटा था।
- मौसी मिल्कियत वाली थी।
- मौसी एक युवा विधवा थी।

58. तो क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे? यह किसने कहा था?

- अलगू ने
- जुम्न ने
- मौसी ने
- सरपंच ने

59. जुम्न ..... था, अलगू ..... था।

- धनी, पढ़ा-लिखा
- अनपढ़, धनी
- धनी, अनपढ़
- शिक्षित, धनवान

60. मौसी ने किसे पंच बदा?

- जुम्न को
- साहूकार को
- अलगू को
- एक किसान को

61. किसका फैसला किसके पक्ष में हुआ?

- अलगू का जुम्न के पक्ष में
- जुम्न का अलगू के पक्ष में
- साहूकार का अलगू के पक्ष में
- अलगू का मौसी के पक्ष में

62. मौसी ने किसको अपनी मिल्कियत की रजिस्ट्री की?

- जुम्न के नाम
- अलगू के नाम
- साहूकार के नाम
- पड़ोसी के नाम

63. ‘मौसी का माथा ठनका’ का अर्थ है

- मौसी को दया आई
- मौसी के सिर में तेज दर्द हुआ
- मौसी को क्रोध आया
- इनमें से कोई नहीं

**निर्देश** (प्र. सं. 64-73) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 14

अलग-अलग घरों से निकलकर आने वाले बालकों ने बस में एक जीवन्त वातावरण बना डाला। ढेर सारे किस्से, तरह-तरह के अनुभव, मार्ग के खेतों, पेड़ों और पक्षियों का अवलोकन, रेत के टीलों का सौन्दर्य, मुँह से निकले गीतों के स्वर और मस्ती से सबका मिल-जुलकर एक साथ गाना-सचमुच पता ही नहीं लगा कि कब भालेरी आ गया? बस अड्डे पर रुकते ही सामने कुआँ था, जिस पर हवा से चलने वाला पम्प लगा था। काफ़ी ऊँचा पनचक्की की किस्म का वह संयन्त्र बालकों के लिए एक आकर्षण था। हो-हो करते चट से भागते हुए वे लोग कुएँ पर जा पहुँचे, वहाँ के मिस्त्री ने उन्हें सारी प्रक्रिया समझाई कि किस तरह हवा में घूमती चक्की से अपने आप धीरे-धीरे कुएँ से पानी निकलता रहता है और सीमेण्ट की बनी उन कुण्डियों में पहुँचता रहता है, जिन पर शीशे के मोटे-मोटे काँच लगे हैं और तेज़ धूप की वजह से जिनके भीतर का पानी गरम होता रहता है और भाप उठकर शीशों से टकराती हुई अलग नालियों से होती हुई मोठे पानी के रूप में बाहर एक हौज में जमा होती रहती है।

बात बहुत छोटी थी, पर देखने के साथ ही छात्रों को विज्ञान के एक सिद्धान्त का साधारणीकरण हो गया। बच्चों ने वहाँ के मिस्त्री जी से खोद-खोदकर अनेकानेक प्रश्न पूछे। अनेक जानकारियाँ बटोरीं। उन्होंने कुएँ का खारा पानी पीया। हौज में गिरने वाले मोठे पानी को चखा। एक ने पूछा कि कितने घण्टों में कितने गैलन पानी कुण्डियों में जमा होता है और उसमें से कितनी मात्रा में मोठा पानी प्राप्त होता है? दूसरे ने पूछा कि खारे पानी से दाँत पीले होते हैं और मोठे पानी से? तीसरे की जिज्ञासा थी कि तब तो आप यहाँ सब्जियों की फसल भी ले सकते हैं।

(दिल्ली विश्वविद्यालय बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2009)

64. 'वे लोग कुएँ तक पहुँच गए' वाक्य में 'वे' सर्वनाम किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (a) सभी के लिए (b) मिस्त्रियों के लिए  
(c) बच्चों के लिए (d) अध्यापकों के लिए

65. 'जिन पर शीशे के मोटे-मोटे काँच लगे हैं' वाक्य में 'जिन' सर्वनाम किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (a) नालियों के लिए (b) हौज के लिए  
(c) संयन्त्र की पत्तियों के लिए (d) सीमेण्ट की कुण्डियों के लिए

66. कुएँ का पानी 'भाप' किसके द्वारा बन रहा था?

- (a) बिजली द्वारा (b) पनचक्की द्वारा  
(c) धूप द्वारा (d) हवा द्वारा

67. मोठा पानी कहाँ जमा हो रहा था?

- (a) हौज में (b) नालियों में (c) कुएँ में (d) कुण्डियों में

68. 'तेजी से' के अर्थ में कौन-सा शब्द सूचक है?

- (a) भागते हुए (b) चट से  
(c) निकलकर आए (d) ढेर सारे

69. बच्चों का स्वाभाविक गुण क्या है?

- (a) गप्पें मारना (b) इधर-उधर की हाँकना  
(c) किस्से बनाना (d) अनुभव बाँटना

70. 'कब भालेरी आ गया' वाक्य किसका सूचक है?

- (a) प्रश्न पूछने के भाव का (b) भालेरी पहुँचने का  
(c) भालेरी उतरने का (d) समय पता न चलने का

71. बच्चों के आकर्षण का केन्द्र क्या है?

- (a) पक्षियों का अवलोकन (b) अनुभवों को बाँटना  
(c) गीत गाना (d) कुएँ पर लगा पम्प

72. कुएँ के पानी के मोठा होने का क्या कारण है?

- (a) यन्त्र द्वारा पानी को छानना  
(b) पानी का भाप बनना  
(c) नमक का सोख जाना  
(d) चक्की द्वारा पानी को चलाना

73. बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्न उनके किस स्वभाव का प्रतीक है?

- (a) प्रश्न पूछने की आदत का  
(b) जानकारी इकट्ठी करने का  
(c) जिज्ञासा का  
(d) प्रयोजनात्मक कार्य को पूरा करने का

**निर्देश** (प्र. सं. 74-79) दिए गए काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### काव्यांश 15

ऐसा है आवेश देश में जिसका पार नहीं।

देखा माता का ऐसा रक्तिम शृंगार नहीं।

कण्ठ-कण्ठ में गान उमड़ते माँ के वन्दन के।

कण्ठ-कण्ठ में गान उमड़ते माँ के अर्चन के।

शीश-शीश में भाव उमड़ते माँ पर अर्पण के।

प्राण-प्राण में भाव उमड़ते शोणित तर्पण के।

जीवन की धारा में देखी ऐसी धार नहीं।

सत्य अहिंसा का व्रत अपना कोई पाप नहीं।

विश्व मैत्री का व्रत भी कोई अभिशाप नहीं।

यही सत्य है सदा असत की टिकती चाप नहीं।

सावधान हिंसक! प्रतिहिंसा की कोई माप नहीं।

कोई भी प्रस्ताव पराजय का स्वीकार नहीं।

ऐसा है आवेश देश में जिसका पार नहीं।

(हरियाणा विद्यालय (मास्टर/मिस्ट्रेट) पात्रता परीक्षा 2009)

74. उपरोक्त काव्यांश में किसके 'आवेश' का उल्लेख हुआ है?

- (a) माता के (b) देश के  
(c) शत्रु के (d) इनमें से कोई नहीं

75. कवि के मतानुसार असत्य है

- (a) स्थायी (b) व्रत  
(c) अभिशाप (d) अस्थायी

76. 'रक्तिम शृंगार' का अर्थ है

- (a) वीर सपूतों का रक्त बलिदान करना  
(b) रक्त बहाना  
(c) शत्रु का खून बहाना  
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

77. 'शोणित तर्पण' का अर्थ है

- (a) खून बहाकर आक्रमणकारी पित्तों का श्राद्ध करना  
(b) शत्रु का शोषण करना  
(c) दुःखी होकर श्राद्ध करना  
(d) वीर सपूतों का रक्त बलिदान करना

78. काव्यांश में 'माता' प्रतीक है

- (a) देवी की (b) विश्वमैत्री की  
(c) सत्य-अहिंसा की (d) राष्ट्र (देश) की

79. प्रस्तुत काव्यांश किस रस से सम्बन्धित है?

- (a) मैत्री रस से (b) भक्ति रस से  
(c) वीर रस से (d) इनमें से कोई नहीं



**निर्देश** (प्र. सं. 80-84) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 16

शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक ही होती है। उनके मूल या मर्म तक उनकी गति नहीं होती। भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति-निवृत्ति को जागरित रखने वाली शक्ति कविता है, जो धर्म-क्षेत्र में शक्ति भावना को जगाती रहती है। भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है। अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है। इस संगम के लिए प्रकृति के क्षेत्र के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिए। जिस प्रकार ज्ञान नरसत्ता के प्रसार के लिए है उसी प्रकार हृदय भी। रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का प्रकृत सामंजस्य घटित नहीं हो सकता। जब मनुष्य के सुख और आनन्द का मेल शेष प्रकृति के सुख-सौन्दर्य के साथ हो जाएगा, जब उसकी रक्षा का भाव तृणगुल्म, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, सबकी रक्षा के भाव के साथ समन्वित हो जाएगा, तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत् का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा। काव्य योग की साधना इसी भूमि पर पहुँचाने के लिए है।

**80.** कविता की गति कहाँ तक होती है?

- निवृत्ति के मूल तक
- प्रवृत्ति और निवृत्ति की भीतरी व्यवस्था तक
- प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक
- प्रवृत्ति के मर्म तक

**81.** व्यापक मंगल भाव का संगत कहाँ दिखाई पड़ता है?

- शासन
- भक्ति में
- धर्म में
- कविता में

**82.** जीवन में स्वाभाविक सामंजस्य कैसे सम्भव है?

- रागात्मिका वृत्ति के प्रसार से
- सुख और आनन्द से
- प्रकृति के सौन्दर्य में
- आत्ममंगल में

**83.** मनुष्य जगत् का सच्चा प्रतिनिधि कैसे बन सकता है?

- मनुष्य के मंगल और शेष प्रकृति के कल्याण-भाव से
- मनुष्य को सुख-आनन्द देने से
- प्रकृति के रक्षा-भाव से
- मनुष्येतर प्राणियों के कल्याण से

**84.** 'काव्य-योग की साधना' से आशय है

- वैयक्तिक सुख-दुःख
- प्रकृति प्रेम
- लोकमंगल
- रसात्मक अनुभूति

**निर्देश** (प्र. सं. 85-89) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 17

व्यक्ति-सम्बन्ध हीन सिद्धान्त-मार्ग निश्चयात्मकता बुद्धि को चाहे व्यक्त हो, पर प्रवर्तक मन को अव्यक्त रहते हैं। वे मनोरंजनकारी तभी लगते हैं, जब किसी व्यक्ति के जीवन क्रम के रूप में देखे जाते हैं। शील की विभूतियाँ अनन्त रूपों में दिखाई पड़ती हैं। मनुष्य जाति ने जब से होश सँभाला, तब से वह इन अनन्त रूपों को महात्माओं के आचरणों तथा आख्यानों और चरित्र-सम्बन्धी पुस्तकों में देखती चली आ रही है। जब इन रूपों पर मनुष्य मोहित होता है, तब सात्विक शील की ओर आप से आप आकर्षित होता है। शून्य सिद्धान्त वाक्यों में कोई आकर्षण-शक्ति या प्रवृत्तिकारणी क्षमता नहीं होती। 'सदा सत्य बोलो', 'दूसरों की भलाई करो', 'क्षमा करना सीखो'—ऐसे-ऐसे सिद्धान्त वाक्य किसी को

बार-बार बकते सुना वैसा ही क्रोध आता है जैसे किसी बेहूदे की बात सुनकर। जो इस प्रकार की बातें करता चला जाए उससे चट कहना चाहिए—'बस चुप रहो, तुम्हें बोलने की तमीज़ नहीं, तुम बच्चों या कोलभीलों के पास जाओ। ये बातें हम पहले से जानते हैं। मानव-जीवन के बीच हम इसके सौन्दर्य का विकास देखना चाहते हैं। यदि तुम्हें दिखाने की प्रतिभा या शक्ति हो तो दिखाओ, नहीं तो चुपचाप अपना रास्ता लो।' गुण प्रत्यक्ष नहीं होता, उसके आश्रय और परिणाम प्रत्यक्ष होते हैं। अनुभवात्मक मन को आकर्षित करने वाले आश्रय और परिणाम हैं, गुण नहीं। ये ही अनुभूति के विषय हैं। अनुभूति पर प्रवृत्ति और निवृत्ति निर्भर हैं। अनुभूति मन की पहली क्रिया है, संकल्प-विकल्प दूसरी। अतः सिद्धान्त-पथों के सम्बन्ध में जो आनन्दानुभव करने की बातें हैं, जो अच्छी लगने की बातें हैं, वे पथिकों में तथा उनके चारों ओर पाई जाएगी। सत्य के दीपक उन्हीं के हाथ में हैं—या वे ही सत्य के दीपक हैं। सत्वोन्मुख प्राणियों के लिए ऐसे पथिकों के सामीप्य-लाभ की कामना करना स्वाभाविक ही है।

**85.** मनुष्य सात्विक शील की ओर आप ही आप आकर्षित कब होता है?

- जब शील की विभूतियों के अनन्त रूपों पर मोहित होता है।
- शून्य सिद्धान्त वाक्यों को सुनकर।
- जब वह काव्य गुणों को पढ़ता है।
- निश्चात्मक बुद्धि का जब उदय होता है।

**86.** प्रवृत्ति और निवृत्ति किस पर निर्भर है?

- कविता के आस्वादन पर
- कविता के गुणों पर
- अनुभूति पर
- महात्माओं के आचरण पर

**87.** मन की दूसरी क्रिया क्या है?

- अनुभूति
- सौन्दर्य
- प्रत्यक्षानुभूति
- संकल्प-विकल्प

**88.** व्यक्ति-सम्बन्धहीन सिद्धान्त मार्ग मनोरंजनकारी कब लगते हैं?

- निश्चयात्मक बुद्धि के अभाव में
- सिद्धान्तकारी वाक्यों को सुनकर
- जब वे किसी व्यक्ति के जीवन क्रम के रूप में देखे जाते हैं
- सत्वोन्मुख प्राणियों के वचन सुनकर

**89.** मानव-जीवन के बीच हम किस सौन्दर्य का विकास देखना चाहते हैं?

- संकल्प-विकल्प का
- सिद्धान्त-वाक्यों में निहित बातों का
- बच्चों को अच्छे-अच्छे सिद्धान्त वाक्य सुनाने का
- गुण-कथन का परिकल्पना

**निर्देश** (प्र. सं. 90-94) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 18

बिम्बविधान बहुत से विशृंखला क्षणों का एक समुच्च होता है। उसका आधार जीवन और जगत् की 'अनेकता' में है। इसके विपरीत प्रतीक किसी सूक्ष्म और गहरी 'एकता' का बोधक होता है। इसलिए प्रतीकों की योजना में जाने-अनजाने एक तार्किक संगति अवश्य रहती है, परन्तु बिम्बविधान में तार्किक संगति का पाया जाना लगभग असम्भव है और यदि पाई भी जाती है, तो वह उसकी तीव्रता को कम करती है, बढ़ाती नहीं। प्रतीक का स्रोत कवि के व्यक्तिगत अनुपंगों में हो सकता है, परन्तु उसका आकलन आनुषंगिक नियमों के आधार पर नहीं होता। उसके निर्माण में अज्ञात रूप से ही सही, एक प्रकार की अन्तर्दृष्टि या सूक्ष्म बौद्धिक प्रेरणा अवश्य रहती है, परन्तु बिम्ब का सम्पूर्ण ढाँचा आनुषंगिक नियमों के द्वारा बुना जाता है। इसलिए उसके संघटन में प्रायः अबौद्धिकता, अन्तर्विरोध और व्यतिक्रम पाया जाता है। प्रतीक मूर्त और अमूर्त दोनों ही हो सकते हैं। इसके विपरीत बिम्ब के लिए, ज्ञानेन्द्रिय के किसी भी स्तर पर मूर्त होना आवश्यक है। यह मूर्तता केवल दृष्टि-विषयक ही नहीं होती, नाद, घ्राण और स्वादपरक भी हो सकती है।

प्रतीक किसी वस्तु का चित्रांकन नहीं करता, केवल संकेत द्वारा उसकी किसी विशेषता को ध्वनित करता है। इसलिए प्रतीक का ग्रहण सन्दर्भ से अलग और एकान्त रूप से भी सम्भव हो सकता है पर बिम्ब की प्रेषणीयता उसके पूरे सन्दर्भ के साथ होती है।

(UGC Net 2018)

90. प्रतीक के आकलन का आधार क्या है?

- वस्तु का चित्रांकन करना
- ज्ञानेन्द्रिय के स्तर पर अनिवार्यतः मूर्त होना
- व्यक्तिगत अनुषंग
- अन्तर्दृष्टि या सूक्ष्म बौद्धिक प्रेरणा

91. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- बिम्ब की मूर्तता केवल दृष्टि-विषयक होती है।
- मूर्तता नाद, घ्राण या स्वाद से सम्बन्धित नहीं होती है।
- बिम्ब ज्ञानेन्द्रिय से असम्बद्ध होता है।
- बिम्ब का ज्ञानेन्द्रिय के किसी स्तर पर मूर्त होना अनिवार्य है।

92. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- तार्किक संगति बिम्ब की तीव्रता को बढ़ाती है।
- प्रतीकों में तार्किक संगति का अभाव होता है।
- बिम्ब का ढोंचा आनुषंगिक नियमों द्वारा बुना जाता है।
- बिम्ब के संघटन में अबोधिता, अन्तर्विरोध और व्यतिक्रम नहीं होता।

93. निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

- प्रतीक में तार्किक संगति अवश्य रहती है।
- प्रतीक संकेत द्वारा वस्तु की विशेषता ध्वनित करता है।
- प्रतीक का ग्रहण सन्दर्भ में अलग एकान्त रूप में सम्भव है।
- प्रतीक का आधार जीवन की अनेकता है।

94. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- बिम्ब की प्रेषणीयता उसके पूरे सन्दर्भ के साथ होती है।
- बिम्बविधान बहुत-से विशृंखला क्षणों का समुच्चय नहीं है।
- बिम्ब ज्ञानेन्द्रिय के स्तर पर मूर्त नहीं होता।
- बिम्बविधान में तार्किक संगति रहती है।

**निर्देश** (प्र. सं. 95-99) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 19

सौन्दर्य किसे कहते हैं? प्रकृति, मानव-जीवन तथा ललित कलाओं के आनन्ददायक गुण का नाम सौन्दर्य है। इसकी स्थापना पर आपत्ति यह की जाती है कि कला में कुरूप और असुन्दर को भी स्थान मिलता है; दुःखान्त नाटक देखकर हमें वास्तव में दुःख होता है; साहित्य में वीभत्स का भी चित्रण होता है; उसे सुन्दर कैसे कहा जा सकता है? इस आपत्ति का उत्तर यह है कि कला में कुरूप और असुन्दर विवादी स्वरों के समान हैं जो राग के रूप को निखारते हैं। वीभत्स का चित्रण देखकर हम उससे प्रेम नहीं करने लगते; हम उस कला से प्रेम करते हैं जो हमें वीभत्स से घृणा करना सिखाती है। वीभत्स से घृणा करना सुन्दर कार्य है या असुन्दर? जिसे हम कुरूप, असुन्दर और वीभत्स कहते हैं, कला में उसकी परिणति सौन्दर्य में होती है। दुःखान्त नाटकों में हम दूसरों का दुःख देखकर द्रवित होते हैं। हमारी सहानुभूति अपने तक अथवा परिवार और मित्रों तक सीमित न रहकर एक व्यापक रूप ले लेती है। मानव-करुणा के इस प्रसार को हम सुन्दर कहेंगे या असुन्दर? सहानुभूति की इस व्यापकता से हमें प्रसन्न होना चाहिए या अप्रसन्न? दुःखान्त नाटकों अथवा करुणा रस के साहित्य से हमें दुःख की अनुभूति होती है, किन्तु यह दुःख अमिश्रित और निरपेक्ष नहीं होता। उस दुःख में वह आनन्द निहित होता है जो करुणा के प्रसार से हमें प्राप्त होता है। इसके सिवा इस तरह के साहित्य में हम बहुधा मनुष्य को विषम परिस्थितियों से वीरतापूर्ण संघर्ष

करते हुए पाते हैं। संघर्ष का यह उदात्त भाव दुःख की अनुभूति को सीमित कर देता है। वीर मनुष्यों को यह संघर्ष हमें अपनी परिस्थितियों के प्रति सजग करता है, उनकी पराजय भी प्रबुद्ध दर्शकों तथा पाठकों के लिए चुनौती का काम करती है। उनकी वेदना हमारे लिए प्रेरणा बन जाती है। आनन्द को इस व्यापक रूप में लें, उसे इन्द्रियजन्य सुख का पर्यायवाची ही न मान लें, तो हमें करुणा और वीभत्स के चित्रण में सौन्दर्य के अभाव की प्रतीति न होगी। (UGC Net 2017)

95. साहित्य में वीभत्स का भी चित्रण सुन्दर होता है, क्योंकि

- वीभत्स को ही काव्यशास्त्र में प्रमुख रस माना गया है।
- कला में असुन्दर और कुरूप का सौन्दर्य में रूपान्तरण होता है।
- कला वीभत्स से घृणा करना नहीं सिखाती।
- वीभत्स का चित्रण आकर्षक होता है।

96. इनमें से कौन-सा कथन सही है?

- वीर मनुष्यों की पराजय आनन्द का मूल कारण है।
- दुःखान्त नाटकों में सहानुभूति के स्वजनो तक सीमित न रहने से मानव करुणा का प्रसार होता है।
- दुःखान्त नाटक दूसरों के दुःख से जुड़े होने के कारण हमारे दुःख का कारण नहीं बनते।
- प्रबुद्ध दर्शक और पाठक दुःख को एक सीमित भाव मानते हैं।

97. इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है?

- वीर मनुष्यों की वेदना समाज के लिए प्रेरणा बन जाती है।
- करुण रस साहित्य में मनुष्य प्रायः विपरीत स्थितियों में संघर्षरत होता है।
- संघर्ष का औदात्य दुःख को सीमित करता है।
- दुःख में आनन्द की अनुपस्थिति होती है।

98. दुःखान्त नाटकों में सौन्दर्य की उपस्थिति का आधार क्या है?

- इनमें कुरूप और असुन्दर को महत्त्व दिया जाता है।
- सभी दुःखान्त नाटक प्रायः महान् होते हैं।
- दुःखान्त नाटकों में मानव करुणा का प्रसार होता है।
- दुःखान्त नाटकों में नाटककार स्वानुभूति का चित्रण करता है।

99. करुण रस के साहित्य में आनन्द निहित होता है, क्योंकि

- आनन्द मात्र इन्द्रिय-जन्य सुख है।
- साहित्य में करुण रस अपरिहार्य है।
- इस साहित्य के मूल में सहानुभूति की व्यापकता है।
- साहित्य में दुःख की निरपेक्ष स्थिति है।

**निर्देश** (प्र. सं. 100-104) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 20

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के पुनर्निर्माण में कार्यरत् मनुष्य के लिए जिन मुख्य बातों पर बल दिया था, वे हैं—चरित्र, आध्यात्मिकता, आत्मविश्वास और अन्ततः सबके प्रति प्रेम, विशेषतः दरिद्र, अशिक्षित तथा पद-दलितों के लिए। यह कार्य वास्तव में महान् है, किन्तु दृढ़ इच्छा के सामने कुछ नहीं टिक सकता।

भारतीयों में भारत माता के प्रति देशभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, “तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती हैं। मत भूलना कि तुम्हारा जीवन अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है—मत भूलना कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र तुम्हारा रक्त और तुम्हारे भाई हैं।” पं. जवाहर लाल नेहरू का कथन स्मरणीय है, जो उन्होंने एक बार स्वामी विवेकानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—“अतीत में संलग्न तथा भारतीय धरोहर के प्रति गर्व से परिपूर्ण होते हुए भी विवेकानन्द जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक धारणा रखते थे तथा भारत के अतीत एवं वर्तमान के मध्य सेतु की भाँति थे। “प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उन्होंने आज के भारत को अत्यन्त

प्रभावित किया है। हमारी युवा पीढ़ी स्वामी जी से लाभान्वित होगी, जिनकी वाणी प्रज्ञा एवं शक्ति से ओत-प्रोत है।” स्वामी जी ने एक अधैर्यवान शिष्य को समझाया कि “श्रद्धावान बन, वीर्यवान बन, आत्मज्ञान प्राप्त कर। यही मेरी इच्छा एवं आशीर्वाद है। श्रद्धा का अभिप्राय कई बातों से है। पहली है आत्मश्रद्धा (आत्मविश्वास), दूसरी है हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति श्रद्धा।” “हमारी मातृभूमि का केन्द्र, प्राण-पखेरू धर्म में तथा केवल धर्म में ही है। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव—इन पर श्रद्धा वान, वीर्यवान भव।” तुम्हारे अन्दर पूर्ण शक्ति निहित है। तुम सब कुछ करने में समर्थ हो। इस शक्ति को पहचानो, उठो और अपना अन्तस्थ ब्रह्मभाव अभिव्यक्त करो.....वीर बनो, वीर बनो। मानव केवल एक बार ही मरता है। सारी शक्ति तुम्हारे अन्दर है। बल ही जीवन है, दुर्बलता मृत्यु.....शैशव से ही तुम्हारे मस्तिष्क में सकारात्मक सशक्त एवं परोपकारी विचार प्रविष्ट होने चाहिए।

(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2007)

**100.** जीवन अपने ‘व्यक्तिगत सुख के लिए न होने’ से स्वामी जी का क्या अभिप्राय है?

- दूसरों का जीवन सुखी बनाना
- अपने सुख की अपेक्षा निर्बल एवं दरिद्र देशवासियों को सुखी रखने का प्रयास करना चाहिए
- देशभक्त का जीवन दुःखदायी होना
- देशभक्त का सुखी न होना

**101.** विवेकानन्द अतीत एवं वर्तमान के मध्य सेतु की भाँति थे, क्योंकि वे

- भारतीय संस्कृति पर गर्व करते हुए भी आधुनिक विचारधारा का यथावश्यक लाभ उठाने में तत्पर रहते थे।
- पुरातन एवं आधुनिक विचारधारा का सहअस्तित्व चाहते थे।
- बीते हुए समय की तथा वर्तमान समस्याओं को एक नजर से देखते थे।
- चाहते थे कि हम आज की समस्याओं तथा पिछली बातों का समन्वय करें।

**102.** ‘अन्तस्थ ब्रह्मभाव की अभिव्यक्ति है’ से अभिप्रेत है

- मन में ब्रह्म के विषय में विचार लाना
- परमात्मा को बाहर खोजने की अपेक्षा अपने ही अन्दर उस सर्वशक्तिमान का अनुभव करना
- भगवान् को अपना सहयोगी समझना
- भगवान् को पूरे मन से पुकारना

**103.** स्वामी जी ने पुनर्निर्माण कार्य हेतु गुणों पर ध्यान दिया, क्योंकि वे

- ऐसे कार्यकर्ताओं से परिचित थे।
- पुनर्निर्माण के कार्य में सफलता हेतु कार्यरत व्यक्ति में इन गुणों का होना परम आवश्यक समझते थे।
- स्वयं ऐसे गुणवान थे।
- अपने सहयोगियों पर विशेष ध्यान रखते थे।

**104.** स्वामी जी पुनर्निर्माण कार्यरत व्यक्ति में किस गुण का होना परम आवश्यक मानते थे?

- चरित्र निर्माण
- शिक्षा प्रसार में रुचि
- सबके प्रति प्रेम
- दृढ़ इच्छा

**निर्देश** (प्र. सं. 105-109) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 21

“फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है; चित्त में यही आता है कि कर्म बहुत कम या बहुत सरल करना पड़े और फल बहुत-सा मिल जाए। श्रीकृष्ण ने कर्म-मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया; पर उनके समझाने पर भी भारतवासी इस वासना से ग्रस्त होकर कर्म से तो उदास हो बैठे और फल के इतने पीछे पड़े कि गली में ब्राह्मण

को एक पेठा देकर पुत्र की आशा करने लगे, चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार से लाभ, शत्रु पर विजय, रोग से मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि तथा और भी न जाने क्या-क्या चाहने लगे। आसक्ति प्रस्तुत या उपस्थित वस्तु में ही ठीक कही जा सकती है। कर्म सामने उपस्थित रहता है। इससे आसक्ति उसी में चाहिए। फल दूर रहता है, इससे उसकी ओर कर्म का लक्ष्य काफी है। जिस आनन्द से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनन्द कर्म करते समय तक बराबर चला चलता है उसी का नाम उत्साह है।”

(UGC Net 2017)

**105.** “फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है।” इस कथन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि

- कर्म करते समय फल के बारे में नहीं सोचना चाहिए।
- फल के बारे में अधिक आसक्ति से कर्म करने में रुचि घटती है।
- फल के बारे में अधिक आसक्ति से कर्म के प्रति उत्साह में इजाफा होता है।
- फल के लालच में जल्दी-जल्दी कर्म करना दुर्घटना का कारण हो सकता है।

**106.** “श्रीकृष्ण ने कर्म मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया था।” से तात्पर्य है

- श्रीकृष्ण ने कहा था कि सिर्फ कर्म करते जाओ और फल की चिन्ता न करो।
- श्रीकृष्ण ने कहा था कि कर्म करते जाओ फल की चिन्ता न करो।
- श्रीकृष्ण ने कहा था कि यदि तुम निष्ठापूर्वक कर्म करेंगे तो फल अवश्य मिलेगा।
- श्रीकृष्ण ने कहा था कि फल में आसक्ति की अधिकता कर्म के प्रति उत्साह में बाधक होती है।

**107.** “आसक्ति प्रस्तुत या उपस्थित वस्तु में ठीक कही जा सकती है।” क्योंकि

- जो प्रस्तुत नहीं है उसकी इच्छा संकट का कारण बन सकती है।
- जो प्रस्तुत नहीं है उसमें रुचि पैदा नहीं हो सकती है।
- कर्म प्रस्तुत होता है इसलिए उसके प्रति रुचि स्वाभाविक है।
- अप्रस्तुत की आकांक्षा मानसिक स्वास्थ्य की पहचान नहीं है।

**108.** चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार से लाभ की आशा करना गीता के विरुद्ध क्यों है?

- इसमें वासना मिली हुई है।
- इसमें कम खर्च करके ज्यादा प्राप्त करने की लालसा है।
- इस कर्म में उत्साह के साथ लोभ जुड़ा है।
- इसके पीछे अन्धविश्वास है।

**109.** दिए गए लेखांश में ‘फल की विशेष आसक्ति’ से लेखक का क्या अभिप्राय है?

- कर्म के प्रति अत्यधिक अनुराग
- फल के प्रति अत्यधिक लोभ
- कर्म और फल दोनों के प्रति अत्यधिक लोभ
- कर्म के प्रति अनुराग और फल के प्रति उदासीनता

**निर्देश** (प्र. सं. 110-114) दिए गए काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## काव्यांश 22

विषुवत रेखा का वासी जो, जीता है नित हॉफ-हॉफ कर  
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर  
ध्रुववासी, जो हिम में तम में, जी लेता है काँप-काँपकर  
वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर  
तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग-सी, सुखद सकल विभवों की आकर  
धरा शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए जीवन पाकर  
तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज,

तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज  
जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन  
रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें ऊँचा सिर ऊँचामन।

110. वीरों के वंशज किसे कहा गया है?

- (a) ध्रुववासियों को (b) विषुवत रेखावासियों को  
(c) भारतीयों को (d) इनमें से कोई नहीं

111. 'तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग-सी' में अलंकार है

- (a) उपमा (b) रूपक  
(c) यमक (d) उत्प्रेक्षा

112. ध्रुववासी रहते हैं

- (a) जहाँ अधिक गरमी पड़ती है।  
(b) जहाँ अधिक सर्दी पड़ती है।  
(c) जहाँ वर्षा अधिक होती है।  
(d) जहाँ चारों तरफ बरफ़ ही बरफ़ होती है।

113. प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक होगा

- (a) मातृभूमि (b) स्वदेश-प्रेम  
(c) वीर पुरुष (d) वीर प्रसूता

114. काव्यांश का मूलभाव है

- (a) लोगों में देशप्रेम की भावना में वृद्धि करना।  
(b) पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर रहने वाले व्यक्तियों के जीवन-यापन का वर्णन करना।  
(c) भारत भूमि का गुणगान एवं मातृभूमि से लगाव रखते हुए स्वाभिमान से जीना।  
(d) पृथ्वी ने अनेक वीरों को जन्म दिया है, इस विषय पर वीरों की प्रशंसा करना।

**निर्देश** (प्र. सं. 115-118) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 23

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुन्दर दिखाई पड़ता है। अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग देखी जाती है उसके सौन्दर्य तक परपीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी बहुत होती ही है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएँ भी लोग तारीफ़ करते हुए सुनते हैं।

अब तक उत्साह का प्रधान रूप ही हमारे सामने रहा जिसमें साहस का पूरा योग रहता है। पर कर्म मात्र के सम्पादन में जो तत्परतापूर्ण आनन्द देखा जाता है, यह भी उत्साह ही कहा जाता है। सब कर्मों में साहस अपेक्षित नहीं होता, पर थोड़ा-बहुत आराम, विश्राम, सुभीते इत्यादि का त्याग सबमें करना पड़ता है और कुछ नहीं तो उठकर बैठना, खड़ा होना या दस-पाँच कदम चलना ही पड़ता है। जब तक आनन्द का लगाव किसी क्रिया व्यापार या उसकी भावना के साथ नहीं दिखाई पड़ता तब तक उसे उत्साह की संज्ञा प्राप्त नहीं होती। यदि किसी प्रिय मित्र के आने का समाचार पाकर हम चुपचाप ज्यों के त्यों आनन्दित होकर बैठे रह जाएँ या थोड़ा हँस भी दें तो हमारा उत्साह नहीं कहा जाएगा। हमारा उत्साह तभी कहा जाएगा जब हम अपने मित्र का आगमन सुनते ही उठ खड़े होंगे। उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके ठहरने आदि के प्रबन्ध में प्रसन्नमुख इधर-उधर आते-जाते दिखाई देंगे। प्रयत्न और कर्म-संकल्प उत्साह नामक आनन्द के नित्य लक्षण हैं।

(RPSC पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

115. किस प्रकार के कर्म करने से उत्साह सुन्दर प्रतीत होता है?

- (a) कठिन (b) सरल (c) कर्तव्य (d) अकर्तव्य

116. कर्म सम्पादन में देखा गया तत्परतापूर्ण आनन्द क्या कहलाता है?

- (a) उत्साह (b) वीरता (c) शौर्य (d) साहस

117. किसी मित्र से मिलने के लिए दौड़ पड़ना कहलाता है

- (a) अच्छे गुण (b) उत्साह (c) औपचारिकता (d) सदाचार

118. लेखांश का उचित शीर्षक है

- (a) साहस और हम (b) कर्तव्यपरायणता  
(c) उत्साह का स्वरूप (d) सद्गुण

**निर्देश** (प्र. सं. 119-123) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 24

जातियाँ इस देश में अनेक आई हैं। लड़ती-झगड़ती भी रही हैं, फिर प्रेमपूर्वक बस भी गई हैं। सभ्यता की नाना सीढ़ियों पर खड़ी और नाना ओर मुख करके चलने वाली इन जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकालना कोई सहज बात नहीं थी। भारतवर्ष के ऋषियों ने अनेक प्रकार से अनेक ओर से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। पर एक बात उन्होंने लक्ष्य की थी। समस्त वर्णों और समस्त जातियों का एक सामान्य आदर्श भी है। वह है अपने ही बन्धनों से अपने को बाँधना। मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है? आहार, निद्रा आदि पशु सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य प्राणियों के, लेकिन फिर भी पशु से भिन्न है। उसमें संयम है, दूसरों के सुख-दुःख के प्रति संवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। यह मनुष्य के स्वयं के उद्भावित बन्धन हैं। इसलिए मनुष्य झगड़े-टटे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी खास जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। वह मनुष्य मात्र का धर्म है। गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि यह सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्मनिर्मित बन्धन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उक्त यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजाने में भी हमारी भाषा से यह भाव कैसे रह गया है। लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान मनुष्य को सर्वत्र पछाड़ता है और आदमी है कि सदा उससे लोहा लेने को कमर कसे है। (RPSC पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

119. अहिंसा सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का उक्त क्या है?

- (a) आत्मनिर्मित बन्धन (b) असत्याचरण  
(c) सद्विचार (d) परोपकार

120. देश में आने वाली विभिन्न जातियों ने क्या खोज निकाला था?

- (a) सामान्य धर्म (b) सुख-शान्ति  
(c) धन-सम्पदा (d) जीवन-पथ

121. किन्होंने यह खोजा कि सभी जातियों का एक सामान्य आदर्श है?

- (a) नेताओं ने (b) आम लोगों ने  
(c) ऋषियों ने (d) महिलाओं ने

122. मनुष्य को मनुष्य कौन बनाता है?

- (a) सत्याचरण (b) सदाचार  
(c) परोपकार (d) आत्मनिर्मित बन्धन

123. आदमी को सर्वत्र कौन पछाड़ता है?

- (a) अहं (b) क्रोध  
(c) अज्ञान (d) निराशा



**निर्देश** (प्र. सं. 124-127) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 25

अकेला अध्यापक बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए सब कुछ नहीं कर सकता। उसको सफलता तब मिलती है जब समाज उसकी सहायता करे। जिस प्रदेश में कलह मचा रहता हो, जिस समाज में गरीब अमीर, ऊँच-नीच की विषमता पुकार-पुकार कर द्वन्द्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन दे रही हो, जिस राष्ट्र की नीति शोषण पर खड़ी हो, उसके अध्यापक भला क्या करें?

जिन घरों में दाल-रोटी का ठिकाना न हो, पिता मद्यप और माता स्वैरिणी हो, माँ-बाप में मार-पीट और गाली-गलौच मची रहती हो, उसके बच्चों को पालने में ही मानस-विष दे दिया जाता है। तंग गलियों और गंदे घरों में रहने वाले, जो छोटपन से ही अश्लीलता और अभद्रता में पले हों, सौन्दर्य को जल्दी समझ नहीं पाते। फिर भी अध्यापक परिस्थितियों को दोष देकर बैठा नहीं रह सकता। उसको तो अपना कर्तव्य पालन करना ही है।

(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)

**124.** बच्चों को संस्कारवान् बनाने का प्रथम दायित्व किसका है?

- (a) माता-पिता का (b) समाज का  
(c) शासन का (d) शिक्षक का

**125.** उपरोक्त लेखांश में किसके कर्तव्य को मुख्य माना गया है?

- (a) समाज (b) राज्य  
(c) अध्यापक (d) बालक

**126.** 'स्वैरिणी' का क्या अर्थ है?

- (a) मनमानी करने वाली  
(b) व्यभिचारिणी  
(c) बुरा व्यवहार करने वाली  
(d) सीधी और सरल

**127.** 'मानस-विष' देने का क्या अभिप्राय है?

- (a) जहर पिला देना (b) मार डालना  
(c) बुरा व्यवहार करना (d) अपराधी बना देना

**निर्देश** (प्र. सं. 128-132) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 26

डॉ. रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक एवं समस्यामूलक एकांकियों की रचना की है। उनके एकांकियों का मूल स्वर आदर्शवादी है। प्रेम, सेवा, उदारता, त्याग और बलिदान की भावनाओं से ओत-प्रोत इन ऐतिहासिक एकांकियों में भारत के अतीत गौरव को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीयता की भावना जगाने का प्रयास किया गया है। समस्यामूलक एकांकियों में वर्मा जी ने शिक्षित मध्यमवर्गीय दम्पतियों की अनेक समस्याओं— प्रेम, सेक्स, सन्देह, दम्भ आदि को कथानक का विषय बनाया है, किन्तु उनकी परिणति आदर्श में हुई है, क्योंकि उनके एकांकियों की नायिकाएँ अन्ततः अपने पति के सम्मान की रक्षा करती हुई दिखाई पड़ती हैं यथा 'रेशमी टाई' की ललिता और 'एन्ट्रेस' एकांकी की नायिका प्रभात कुमारी। अतिशय आदर्शवादिता के कारण वर्मा जी के एकांकी यथार्थ से दूर हो गए जान पड़ते हैं, किन्तु एकांकी शिल्प की दृष्टि से वे हिन्दी के युग प्रवर्तक एकांकी माने जा सकते हैं। आरम्भ, कुतूहल, संकलन त्रय, चरम सीमा आदि तत्त्व उनके एकांकियों में बड़ी सूक्ष्मता से विद्यमान हैं। रंगमंचीयता एवं अभिनेयता के गुणों से भी उनके एकांकी सम्पन्न हैं तथा उनमें सरसता के साथ-साथ शिल्प की प्रौढ़ता भी विद्यमान है। वस्तुतः एकांकी कला को चरम यौवन पर पहुँचाने का श्रेय डॉ. रामकुमार वर्मा को ही दिया जाता है।

(UKTET 2015)

**128.** उक्त लेखांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

- (a) डॉ. वर्मा की लेखन शैली  
(b) डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी  
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में राष्ट्रीयता  
(d) डॉ. वर्मा के एकांकियों में रंगमंचीयता

**129.** उक्त लेखांश में प्रयुक्त शैली है

- (a) विवरणात्मक (b) विवेचनात्मक (c) आलोचनात्मक (d) गवेषणात्मक

**130.** डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों का मूल स्वर है

- (a) यथार्थवादी (b) आदर्शवादी  
(c) आदर्शानुमुखी यथार्थवादी (d) इनमें से कोई नहीं

**131.** रंगमंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से वर्मा जी के एकांकी

- (a) सफल हैं (b) असफल हैं  
(c) सम्पादन मांगते हैं (d) इनमें से कोई नहीं

**132.** वर्मा जी के समस्यामूलक एकांकियों में चित्रण किया गया है

- (a) शिक्षित मध्यमवर्गीय दम्पतियों की समस्या का  
(b) राजनीतिक समस्या का  
(c) शोषण की समस्या का  
(d) सामाजिक समस्या का

**निर्देश** (प्र. सं. 133-139) दिए गए काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### काव्यांश 27

जग-जीवन में जो चिर महान्,  
सौन्दर्यपूर्ण और सत्यप्राण,  
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ!  
जिससे मानव-हित हो समान!  
जिससे जीवन में मिले शक्ति  
छूटे भय-संशय, अंधभक्ति,  
मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ!  
मिल जावे जिसमें अखिल व्यक्ति!

**133.** कवि ने 'चिर महान्' किसे कहा है?

- (a) मानव को (b) ईश्वर को  
(c) जो सत्य और सुन्दर से सम्पूर्ण हो (d) शक्ति को

**134.** कवि कैसा प्रकाश बनना चाहता है?

- (a) जिससे सब तरफ उजाला हो जाए  
(b) अज्ञान का अंधकार दूर हो जाए  
(c) जो जीने की शक्ति देता है  
(d) जिसमें मनुष्य सभी भेदभाव भुलाकर एक हो जाते हैं

**135.** कवि ने 'अखिल व्यक्ति' का प्रयोग क्यों किया है?

- (a) कवि समस्त विश्व के व्यक्तियों की बात करना चाहता है।  
(b) कवि अमीर लोगों की बात कहना चाहता है।  
(c) कवि भारत के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाहता है।  
(d) कवि ब्रह्मज्ञानी बनना चाहता है।

**136.** कविता के किस अंश में तर्कहीन आस्था का उल्लेख हुआ है?

- (a) छूटे भय-संशय, अंध-भक्ति  
(b) मिल जावें जिसमें अखिल व्यक्ति!  
(c) मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ!  
(d) जिससे मानव-हित हो समान!



**137.** कवि ने कविता की पंक्तियों के अन्त में विस्मयादि बोधक चिह्न का प्रयोग क्यों किया है?

- (a) कविता को तुकान्त बनाने के लिए
- (b) कवि अपनी इच्छा प्रकट कर रहा है
- (c) इससे कविता का सौन्दर्य बढ़ता है
- (d) पूर्ण विराम की लीक से हटने के लिए

**138.** कविता का मूलभाव क्या है?

- (a) कल्याण
- (b) अमरदान की प्राप्ति
- (c) विश्व-परिवार की भावना
- (d) सत्य की प्राप्ति

**139.** 'प्रेमी' शब्द का पर्यायवाची नहीं है

- (a) अनुरागी
- (b) स्नेही
- (c) प्रियतम
- (d) दुलारा

**निर्देश** (प्र. सं. 140-145) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 28

शिक्षा को वैज्ञानिक और प्राविधिक मूलाधार देकर हमने जहाँ भौतिक परिवेश को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया है और जीवन को अप्रत्याशित गतिशीलता दे दी है, वहाँ साहित्य, कला, धर्म और दर्शन को अपनी चेतना से बहिष्कृत कर मानव विकास को एकांगी बना दिया है। पिछली शताब्दी में विकास के सूत्र प्रकृति के हाथ से निकलकर मनुष्य के हाथ में पहुँच गए हैं, विज्ञान के हाथ में पहुँच गए हैं और इस बन्द गली में पहुँचने का अर्थ मानव जाति का नाश भी हो सकता है। इसलिए नैतिक और आत्मिक मूल्यों को साथ-साथ विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे विज्ञान हमारे लिए भस्मासुर का हाथ न बन जाए। व्यक्ति की क्षुद्रता यदि राष्ट्र की क्षुद्रता बन जाती है, तो विज्ञान भस्मासुर बन जाता है। इस सत्य को प्रत्येक क्षण सामने रखकर ही अणु-विस्फोट को मानव प्रेम और लोकहित की मर्यादा दे सकेंगे। अपरिसीम भौतिक शक्तियों का स्वामी मानव आज अपने व्यक्तित्व के प्रति आस्थावान नहीं है और प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में शंकाग्रस्त है।

(UPSSSC लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)

**140.** आज का मानव अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व के प्रति इसलिए शंकालु है, क्योंकि

- (a) वह विज्ञान की विध्वंसक शक्तियों से भयभीत है।
- (b) उसका आत्मविश्वास लुप्त होता जा रहा है।
- (c) मानव ईश्वर के प्रति आस्थावान नहीं है।
- (d) वह सीमित भौतिक शक्तियों का स्वामी है।

**141.** हमारी विज्ञानाधृत शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन है

- (a) जीवन का एकांगी विकास
- (b) गतिशील जीवन का प्रत्यावर्तन
- (c) जीवन का अपरिसीम भौतिक विकास
- (d) जीवन का सर्वांगीण विकास

**142.** मानव जीवन को भस्मासुर बनने से कैसे रोक सकता है?

- (a) प्रकृति-जगत का पूर्ण स्वामित्व प्राप्त करके
- (b) मानव सभ्यता का विनाश करके
- (c) भौतिक जीवन-मूल्यों का निर्धारण करके
- (d) नैतिक-आत्मिक मूल्यों को विकसित करके

**143.** आधुनिक मानव विकास को सर्वांगीण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि

- (a) साहित्य, धर्म, कला आदि मानव चेतना से निर्वासित हैं।
- (b) जीवन में आधातीत गतिशीलता का समावेश नहीं हुआ।
- (c) विकास के सूत्र मानव के हाथ में हैं।
- (d) भौतिक परिवेश पूर्णतया परिवर्तित हो गया है।

**144.** अणु-विस्फोट को मानवतावाद की मर्यादा देना तभी सम्भव है, जब व्यक्ति की

- (a) क्षुद्र भावनाओं का उन्नयन हो।
- (b) उदात्त भावनाओं को विकसित किया जाए।
- (c) क्षुद्रता को राष्ट्र की क्षुद्रता न बनने दिया जाए।
- (d) क्षुद्रता जब राष्ट्र की क्षुद्रता बन जाए।

**145.** रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना 'माटी की मूरतें' किस साहित्यिक विधा से सम्बन्धित है?

- (a) यात्रावृत्तान्त
- (b) उपन्यास
- (c) रेखाचित्र
- (d) नाटक

**निर्देश** (प्र. सं. 146-150) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## लेखांश 29

समय का आदर करना ही उसका सदुपयोग करना है। जो व्यक्ति समय की सही कीमत जान लेता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त कर पाता है। यह धन से भी अधिक महत्वपूर्ण है। धन खोने पर वापस पाया जा सकता है, परन्तु बीता हुआ समय नहीं लौटाया जा सकता है। छात्रों के जीवन में इसका अधिक महत्व है। जो छात्र इस उम्र में समय की कद्र करना सीख जाते हैं, वे भविष्य में तरक्की की ऊँचाइयों को छू लेते हैं। चाणक्य, गाँधी जी, अशोक आदि ने समय का सदुपयोग कर अपने पैरों के निशान छोड़ दिए। जीवन का प्रत्येक क्षण भविष्य का निर्माता है। जो लोग इसके महत्व को नहीं समझ पाते, वे केवल हाथ मलते रह जाते हैं। हम चाहे विश्राम कर लें परन्तु समय कभी विश्राम नहीं करता। समय के प्रति सजगता मानव जीवन के लिए उपयोगी है। अतः छात्रों को समय की कीमत पहचानकर इसका सार्थक उपयोग करना चाहिए।

(UPSSSC मण्डी परिषद 2019)

**146.** 'समय का सदुपयोग' का क्या अर्थ है?

- (a) उसको सम्भालकर रखना
- (b) उसे व्यर्थ न करना
- (c) उसका अन्याय करना
- (d) उसे व्यर्थ करना

**147.** छात्रों के लिए समय का सदुपयोग अधिक आवश्यक क्यों है?

- (a) जो इसकी महत्ता समझते हैं वे सफल होते हैं।
- (b) सदुपयोग करने से सदा विफल होते हैं।
- (c) कभी भी सफल नहीं होते हैं।
- (d) सदा पीछे रहते हैं।

**148.** समय धन से अधिक महत्वपूर्ण क्यों है?

- (a) समय वापस मिल जाएगा पर धन नहीं
- (b) बहुत मेहनत से मिलता है
- (c) धन वापस मिल जाएगा पर समय नहीं
- (d) समय नहीं मिलता

**149.** निम्न में से कौन-सा विकल्प 'सजगता' का पर्यायवाची नहीं है?

- (a) प्रमाद
- (b) सतर्कता
- (c) होशियारी
- (d) चौकन्नापन

**150.** इस लेखांश का सबसे उपयुक्त शीर्षक बताएँ

- (a) जीवन और समय
- (b) छात्र जीवन और समय
- (c) छात्र जीवन
- (d) समय का अनुपयोग

**निर्देश** (प्र. सं. 151-153) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 30

शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है। इससे आशंका और सन्देह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती। अधिकारी-अधीनस्थ, शिक्षक-शिक्षार्थी, छोटे-बड़े आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृद्धि स्वतः ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर और प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। इस गुण के माध्यम से छोटे-से-छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है। शील कोई दुर्लभ और दैवी गुण नहीं है। इस गुण को अर्जित किया जा सकता है। पारिवारिक संस्कार इस गुण को विकसित और विस्तारित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं।

(UPSSSC 2018)

**151.** निम्नलिखित में से कौन-सा कथन शील के सम्बन्ध में गलत है?

- शीलयुक्त व्यवहार से सुखद वातावरण का निर्माण होता है।
- शील एक दैवी गुण है।
- पारिवारिक संस्कार शील को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- शीलयुक्त व्यवहार छोटे-बड़े में समान रूप से आवश्यक है।

**152.** लेखांश में रेखांकित अंश की उचित व्याख्या होगी

- शील प्रभु द्वारा दिया जाता है।
- किसी कार्य के बिगड़ने पर शील प्रभुत्व स्थापित कर लेता है।
- जहाँ शील का प्रभुत्व होता है वहाँ कोई कार्य बिगड़ने नहीं पाता।
- जहाँ कार्य बिगड़ता है वहाँ शील का प्रभुत्व होता है।

**153.** लेखांश में कौन-सा शब्द 'दुष्प्रभावित' का विलोम है?

- कुप्रभावित
- प्रगाढ़
- सुप्रभावित
- आशंका

**निर्देश** (प्र. सं. 154-156) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 31

आनन्द और खुशी की खोज में हम सारा जीवन लगे रहते हैं। बाह्य शिष्टाचारों से खुशी तो प्राप्त होती है, किन्तु वह क्षणिक होती है। आत्मिक खुशी तो हमें अपने अन्दर ही तलाशनी होती है। हमारे अन्तःकरण में आनन्द का सरोवर और खुशी का खजाना सदैव विद्यमान रहता है। ये यादों और अनुभूतियों का वह भण्डारघर है, जहाँ हमारा अन्तःकरण आज तक की सभी यादों और अनुभूतियों को संग्रहीत करके रखता है। यह बहुत बुद्धिमान और चतुर है। यह आपका आज्ञाकारी दास भी है। इसके विशाल संग्रह में से आत्मिक आनन्द को प्राप्त करना है तो इसे उसी दिशा में निर्देशित करना होगा। बाह्य मन को कुछ देर के लिए शान्त, स्थिर और गतिहीन कीजिए और अन्तर्मन को निर्देश दीजिए कि वह अपने संग्रह में से नकारात्मक यादों-अनुभूतियों को मिटाकर आपके लिए आनन्द के अनमोल सच्चे मोती निकालकर लाए। निरन्तर अपने अन्तःकरण को यही आज्ञा देते रहिए और धीरे-धीरे वह कब आपको आत्मिक आनन्द और जीवन-स्फूर्ति से सराबोर कर देगा, आपको पता भी नहीं चलेगा।

(UPSSSC AG TA 2019)

**154.** उपरोक्त लेखांश को ध्यान से पढ़िए और उपरोक्त शीर्षक का चयन कीजिए

- आनन्द की खोज
- अन्तर्मन-यादों का भण्डारघर
- अन्तर्मन
- अन्तर्मन की शक्ति

**155.** उपरोक्त लेखांश को ध्यान से पढ़िए और उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए अन्तर्मन से आत्मिक आनन्द कैसे मिलता है?

- अन्तर्मन समझता है कि हमें आनन्द चाहिए।
- अन्तर्मन नकारात्मकता को मिटाकर सकारात्मकता से मन को शान्त कर देता है, जिससे आत्मिक आनन्द मिलता है।
- अन्तर्मन में केवल अच्छी यादें संग्रहीत रहती हैं, उन्हीं को वापस कर देता है।
- अन्तर्मन सदैव अच्छे काम करता है।

**156.** उपरोक्त लेखांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसका सही सारांश बताइए

- जब अन्तर्मन को प्रतिदिन शान्त, स्थिर और खुश रहने का निर्देश मिलता है तो वह एक आज्ञाकारी किन्तु समझदार सेवक की तरह मन की सारी नकारात्मक गतिविधियों को हटाता जाता है और अच्छी और सुखद अनुभूतियों को प्रवाहित करने लगता है। मन शान्त होने से आनन्द का अनुभव होने लगता है और धीरे-धीरे यही आनन्द भाव स्थायी हो जाता है।
- जब अन्तर्मन को प्रतिदिन शान्त, स्थिर और खुश रहने का निर्देश मिलता है तो वह एक आज्ञाकारी किन्तु समझदार सेवक की तरह मन में आनन्द भर देता है।
- अन्तर्मन को निर्देश मिलने से मन शान्त हो जाता है और आनन्द का अनुभव होने लगता है।
- अन्तर्मन में बहुत शक्ति होती है। वह हमारे निर्देशानुसार मन के बुरे विचार हटाकर अच्छे विचारों से भर देता है जिससे खुशी मिलती है।

**निर्देश** (प्र. सं. 157-159) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

### लेखांश 32

भारतीय दर्शन सिखाता है कि जीवन का एक आशय और लक्ष्य है। आशय की खोज हमारा दायित्व है और अन्त में उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना हमारा विशेषाधिकार है। इस प्रकार दर्शन जो कि आशय को उद्घाटित करने की कोशिश करता है और जहाँ तक उसे इसमें सफलता मिलती है, वह इस लक्ष्य तक अग्रसर होने की प्रक्रिया है। कुल मिलाकर आखिर यह लक्ष्य क्या है? इस अर्थ में यथार्थ की प्राप्ति वह है, जिसमें पा लेना केवल जानना नहीं है, बल्कि उसी का अंश हो जाना है। इस उपलब्धि में बाधा क्या है? बाधाएँ कई हैं, पर इनमें प्रमुख है-अज्ञान। अशिक्षित आत्मा नहीं है, यहाँ तक कि यथार्थ संसार भी नहीं है और अपनी शिक्षा से उसे उस अज्ञान से मुक्ति दिलाता है, जो यथार्थ दर्शन नहीं होने देता। इस प्रकार एक दार्शनिक होना एक बौद्धिक अनुगमन करना नहीं है, बल्कि एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना है, क्योंकि सत्य की खोज में लगे हुए सही दार्शनिक को अपने जीवन को इस प्रकार आचरित करना पड़ता है ताकि उस यथार्थ से एकाकार हो जाए जिसे वह खोज रहा है। वास्तव में यही जीवन का एकमात्र सही मार्ग है और सभी दार्शनिकों को इसका पालन करना होता है और दार्शनिक ही नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों के दायित्व और नियति एक ही है।

(UPSSSC 2018)

**157.** उपरोक्त लेखांश का समुचित शीर्षक चुनिए।

- जीवन का एक आशय
- मनुष्य की नियति
- भारतीय दर्शन और जीवन
- अज्ञान से मुक्ति

**158. उपरोक्त लेखांश का संक्षेपण कीजिए।**

- दर्शन जीवन का एकमात्र सही मार्ग है और सभी दार्शनिकों को इसका पालन करना होता है और दार्शनिक ही नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों को, क्योंकि सभी मनुष्यों के दायित्व और नियति एक ही है।
- भारतीय दर्शन सिखाता है कि जीवन का एक आशय और लक्ष्य है, आशय की खोज हमारा दायित्व है और अन्त में उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना हमारा विशेषाधिकार है।
- दर्शन जो कि आशय को उद्घाटित करने की कोशिश करता है और जहाँ तक उसे इसमें सफलता मिलती है, वह इस लक्ष्य तक अग्रसर होने की प्रक्रिया है।
- भारतीय दर्शन जीवन के लक्ष्य की खोज करके उसे पाने की प्रक्रिया भी बताता है। लक्ष्य को पा लेना उसे केवल जानना नहीं है, बल्कि उसका अंश हो जाना है। इस उपलब्धि में प्रमुख बाधा है-अज्ञान, जिसे दर्शन ही दूर कर सकता है। इस प्रकार दार्शनिक को स्वयं अनुशासित होना पड़ता है ताकि वह यथार्थ से एकाकार हो जाए। इसी नाते अनुशासित आचरण का पालन सभी मनुष्यों को करना होता है।

**159. उपरोक्त लेखांश के आधार पर बताइए कि यथार्थ की प्राप्ति में प्रमुख बाधा क्या है?**

- अज्ञान
- दायित्व
- नियति
- अनुशासन

**निर्देश** (प्र. सं. 160-162) दिए गए लेखांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**लेखांश 33**

अनन्त रूपों में प्रकृति हमारे सामने आती है-कहीं मधुर, सुसज्जित या सुन्दर रूप में, कहीं रूखे, बेड़ौल या कर्कश रूप में; कहीं भव्य, विशाल या विचित्र रूप में और कहीं उग्र रूप में; कराल या भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उसके उन सब रूपों में लीन होता है, क्योंकि उसके अनुराग का कारण अपना खास सुखभोग नहीं, बल्कि चिरसाहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना है, जो केवल प्रफुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ-संचार, मकरंदलोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिलकूजित निकुंज और शीतल सुखस्पर्श समीर की ही चर्चा किया करते हैं, वे विषयी या भोगलिप्सु हैं। इसी प्रकार जो केवल मुक्ताभासहिम बिन्दुमण्डित मरकताभ शाद्वलजाल, अत्यन्त विशाल गिरिशिखर से गिरते जलप्रपात की गम्भीर गति से उठी हुई सीकरनीहारिका के बीच विविधवर्ण स्फुरण की विशालता, भव्यता और

विचित्रता में ही अपने हृदय के लिए कुछ पाते हैं वे तमाशबीन हैं, सच्चे भावुक या सहृदय नहीं। प्रकृति के साधारण, असाधारण सब प्रकार के रूपों को रखने वाले वर्णन हमें वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति इत्यादि संस्कृत के प्राचीन कवियों में मिलते हैं। पिछले खेव के कवियों ने मुक्तक रचना में तो अधिकतर प्राकृतिक वस्तुओं का अलग-अलग उल्लेख केवल उद्दीपन की दृष्टि से किया है। प्रबन्ध रचना में थोड़ा-बहुत संश्लिष्ट चित्रण किया है, वह प्रकृति की विशेष रूपविभूति को लेकर ही।

(UPSSSC VDO 2019)

**160. उपरोक्त लेखांश के लिए उचित शीर्षक बताइए।**

- प्रकृति का रूप
- कवि और प्रकृति
- सच्चा कवि
- प्रकृति का सौन्दर्य

**161. उपरोक्त लेखांश के आधार पर बताइए कि प्रकृति के साधारण, असाधारण सब प्रकार के रूपों को रखने वाले वर्णन हमें कहाँ देखने को मिलते हैं?**

- प्रबन्ध रचना में
- मुक्तक रचना में
- पिछले खेव के कवियों में
- वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति इत्यादि संस्कृत के प्राचीन कवियों में

**162. उपरोक्त लेखांश का संक्षेपण कीजिए**

- सच्चे कवि का हृदय प्रकृति के सभी रूपों में लीन होता है, क्योंकि उसके अनुराग का कारण अपना खास सुखभोग नहीं, बल्कि चिरसाहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना है।
- जो केवल मुक्ताभासहिम बिन्दुमण्डित मरकताभ शाद्वलजाल, अत्यन्त विशाल गिरिशिखर से गिरते जलप्रपात की गम्भीर गति से उठी हुई सीकरनीहारिका के बीच विविधवर्ण स्फुरण की विशालता, भव्यता और विचित्रता में ही अपने हृदय के लिए कुछ पाते हैं वे तमाशबीन हैं, सच्चे भावुक या सहृदय नहीं।
- प्रकृति के दो रूप हैं; एक सुन्दर, दूसरा बेड़ौल। सच्चे कवि का हृदय दोनों में रमता है, किन्तु जो प्रकृति के बाहरी सौन्दर्य का चयन अथवा उसकी रहस्यमयता का उद्घाटन करता रह गया, वह कवि नहीं है। प्रकृति के सच्चे रूपों का चित्रण संस्कृत के प्राचीन कवियों में मिलता है। प्रबन्ध काव्यों में उसका संश्लिष्ट वर्णन हुआ है।
- पिछले खेव के कवियों ने मुक्तक रचना में तो अधिकतर प्राकृतिक वस्तुओं का अलग-अलग उल्लेख केवल उद्दीपन की दृष्टि से किया है। प्रबन्ध रचना में थोड़ा-बहुत संश्लिष्ट चित्रण किया है, वह प्रकृति की विशेष रूपविभूति को लेकर ही।

**उत्तरमाला**

1. (b)	2. (d)	3. (a)	4. (a)	5. (b)	6. (b)	7. (a)	8. (d)	9. (c)	10. (c)
11. (d)	12. (d)	13. (a)	14. (b)	15. (d)	16. (c)	17. (a)	18. (c)	19. (c)	20. (c)
21. (d)	22. (d)	23. (d)	24. (b)	25. (a)	26. (d)	27. (d)	28. (a)	29. (b)	30. (d)
31. (b)	32. (d)	33. (c)	34. (d)	35. (c)	36. (c)	37. (d)	38. (b)	39. (c)	40. (a)
41. (b)	42. (a)	43. (d)	44. (b)	45. (d)	46. (c)	47. (d)	48. (c)	49. (a)	50. (c)
51. (b)	52. (d)	53. (c)	54. (b)	55. (b)	56. (c)	57. (c)	58. (c)	59. (d)	60. (c)
61. (d)	62. (a)	63. (d)	64. (c)	65. (d)	66. (c)	67. (a)	68. (b)	69. (d)	70. (d)
71. (d)	72. (b)	73. (c)	74. (b)	75. (a)	76. (a)	77. (d)	78. (d)	79. (c)	80. (b)
81. (d)	82. (a)	83. (a)	84. (c)	85. (a)	86. (c)	87. (d)	88. (c)	89. (b)	90. (d)
91. (d)	92. (c)	93. (d)	94. (a)	95. (b)	96. (b)	97. (d)	98. (c)	99. (c)	100. (b)
101. (a)	102. (b)	103. (b)	104. (d)	105. (b)	106. (d)	107. (c)	108. (a)	109. (b)	110. (c)
111. (a)	112. (d)	113. (b)	114. (c)	115. (c)	116. (a)	117. (b)	118. (c)	119. (a)	120. (a)
121. (c)	122. (d)	123. (c)	124. (a)	125. (a)	126. (b)	127. (d)	128. (b)	129. (c)	130. (b)
131. (a)	132. (a)	133. (b)	134. (d)	135. (a)	136. (a)	137. (b)	138. (c)	139. (d)	140. (a)
141. (a)	142. (d)	143. (a)	144. (c)	145. (c)	146. (b)	147. (a)	148. (c)	149. (a)	150. (b)
151. (b)	152. (c)	153. (c)	154. (a)	155. (b)	156. (d)	157. (c)	158. (b)	159. (a)	160. (b)
161. (d)	162. (c)								